परमेश्वर का छुड़ाने वाला हृदय

आशीष रायचूर

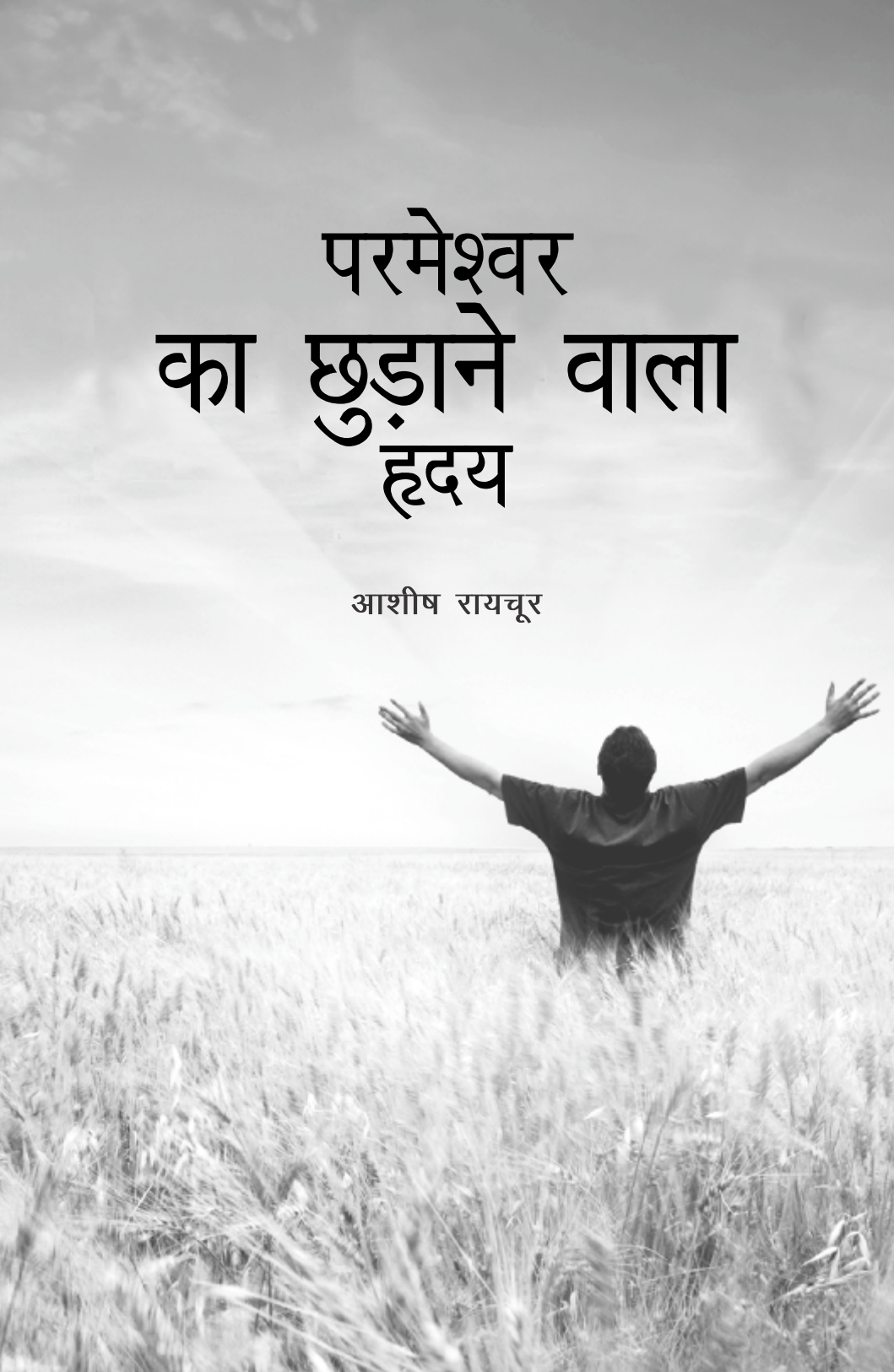

केवल निःशुल्क वितरण के लिए

ऑल पीपल्स चर्च एंड वर्ल्ड आउटरीच, बैंगलोर, भारत द्वारा निर्मित और वितरित।
वर्तमान संस्करणः 2023

संपर्क जानकारी

All Peoples Church & World Outreach,
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617
Email: **bookrequest@apcwo.org**
Website: **apcwo.org**

अन्यथा जबतक इंगित न किया हो धर्म शास्त्र के सभी संदर्भ पवित्र बाइबल के पुनःसंपादित पुराने संस्करण से अनुमति सहित लिए गए हैं। सर्वाधिकार आरक्षित है।

आर्थिक साझेदारी

इस पुस्तक का निःशुल्क वितरण ऑल पीपल्स चर्च के सदस्यों, सहभागियों और मित्रों की आर्थिक सहायता की वजह से सम्भव हुआ है। यदि आपने इस निःशुल्क प्रकाशन के माध्यम से आशीष पाई है, तो हम आपको ऑल पीपल्स चर्च के निःशुल्क प्रकाशनों के मुद्रण और वितरण में सहायता के लिए आर्थिक रूप से योगदान देने हेतु आमंत्रित करते हैं। कृपया **apcwo.org/give** पर जाएं या अपना योगदान कैसे करें यह देखने हेतु इस पुस्तक के पीछे "ऑल पीपल्स चर्च के साथ प्रतिभागिता" पृष्ठ देखें। धन्यवाद!

निःशुल्क संसाधन

उपदेशः apcwo.org/sermons | **पुस्तकेंः** apcwo.org/books | **चर्च ऐपः** apcwo.org/app
बाइबिल कॉलेजः apcbiblecollege.org | **ई-लर्निंगः** apcbiblecollege.org/elearn
परामर्शः chrysalislife.org | **संगीतः** apcmusic.org
मिनिस्टर्स फेलोशिपः pamfi.org | **ए.पी.सी. वर्ल्ड मिशंसः** apcworldmissions.org

(Hindi - The Redemptive Heart of God)

परमेश्वर का छुड़ाने वाला हृदय

विषयसूची

परिचय

1 परमेश्वर का स्वभाव छुड़ाने वाला है 1

2. परमेश्वर के छुड़ाने वाले कार्य का स्वरूप 13

3. परमेश्वर के छुटकारे की प्रक्रिया में मुख्य तत्व 29

परिचय

जब हमारे जीवनों में परिस्थितियां बिगड़ जाती हैं, तब हमें क्या करना चाहिए? अच्छी बातें अचानक बुरी हो जाती हैं और हमने कल्पना भी नहीं की होगी, वे इतनी बिगडती जा सकती हैं। ऐसा जीवन के एक या और क्षेत्रों में हो सकता है, शायद हमारे पैसों, परिवार, बच्चों, करियर, व्यवसाय, कारोबार, सेवकाई, या कुछ और क्षेत्रों में हो सकता है। हम बिगड़े हुए जीवन और परिस्थितियों की ओर कैसे देखें? उसी तरह, जब उन लोगों के जीवनों में बुरा समय आता है जिन्हें हम जानते हैं या "जो हमारे पास सहायता के लिए आते हैं, तब हमारी प्रतिक्रिया क्या होती है?"

परमेश्वर का हृदय स्वभावतः छुड़ाने वाला है। परमेश्वर जो आरंभ करता है वह उसे नहीं छोड़ता। वह पूर्ण रूप से प्रेम करता और बचाता है, फिर उसकी कीमत चाहे जो भी हो। परमेश्वर हमेशा छुटकारा देने का और लोगों को अपनी ओर लाने का प्रयास करता है। हमें उसके समान बनने के लिए बुलाया गया है और इसलिए जीवन की परिस्थितियों के प्रति और उन समस्याओं के प्रति जिनका हम सामना करते हैं, हमें छुड़ाने वाला होना चाहिए।

इस अध्ययन में, हमारा लक्ष्य परमेश्वर के छुड़ाने वाले हृदय को समझना और थाम लेना है, ताकि हम उसकी छुड़ाने वाली नज़रों से जीवन की परिस्थितियों को देखें और हमारे अपने जीवनों में एवं हमारे आस पास के लोगों के जीवनों में उसकी छुड़ाने वाली प्रक्रिया में परमेश्वर के सहकर्मी बनना सीखेंगे।

स्थानीय सत्य और व्यवहारिक कार्य

क्रूस पर मसीह ने सभी लोगों के लिए और सभी बातों के लिए जो कार्य पूरा किया, उसके द्वारा छुटकारा प्रदान किया गया है। विश्वासी होने के

नाते, हम यीशु मसीह के लहू से छुड़ाए गए हैं। मसीह में हम अंधकार की शक्तियों से छुड़ाए गए हैं और हमें परमेश्वर के अपने प्रिय पुत्र के राज्य में लाया गया है। शैतान हम पर अधिकार नहीं जता सकता हमें मूल्य देकर मोल लिया गया है—आत्मा, प्राण और शरीर और हम परमेश्वर के हैं। मसीह में हमारे स्थान के द्वारा हमारा छुटकारा एक सिद्ध और सम्पूर्ण कार्य है।

परंतु हमारे जीवनों में यहां पृथ्वी पर, ऐसी कई बातें हो सकती हैं जो परमेश्वर की योजना, मानक और उद्देश्य के अनुसार नहीं हैं। परमेश्वर चाहता है कि मसीह में हमारे लिए दिए गए उसके छुटकारे को हम देख सकें, छू सकें, और यहां पृथ्वी पर हमारे जीवन के सभी क्षेत्रों को बदल दें और प्रभावित करें। मसीह में हमारे लिए जो कुछ दिया गया है, वह हमारे प्रतिदिन के जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में वास्तविक होना चाहिए।

इस अध्ययन में जिन बातों को हम पढ़ रहे हैं उनका संबंध हमारे जीवनों की उन बातों और क्षेत्रों से है जहां पर हम परमेश्वर के छुड़ाने वाले कार्य को होते हुए देखना चाहते हैं। हमारी इच्छा यह देखने की है कि परमेश्वर का छुड़ाने वाला कार्य हमारे जीवन के उन क्षेत्रों को फिर देखें और पुर्नस्थापित करें जहां पर वे गलत दिशा में गए हैं और परमेश्वर की मूल योजना और उद्देश्य से हट गए हैं, उदाहरण के तौर पर, परिवार, पैसा, बच्चे आदि। हम यह भी विचार करते हैं कि परमेश्वर के छुडाने वाले कार्य को हमारे आस पास के लोगों के जीवनों में कैसे ले आए, उनके जीवनों के क्षेत्रों को भी छुटकारा पाते हुए देख सकें। उसके राजदूत और सहकर्मी होने के नाते, जब हम यह देखने के लिए लोगों की ओर हाथ बढ़ाते हैं कि उनका और अन्य बातों का परमेश्वर से मेल हो, तब हम भी जो कुछ भी हम करते हैं उसमें छुड़ाने वाले बनते हैं।

परमेश्वर आपको आशीष दे!
आशीष रायचूर

1

परमेश्वर का स्वभाव छुड़ाने वाला है

नए नियम में, छुड़ाने या छुटकारे का अर्थ किसी गुलाम को उसके छुटकारे का दाम देकर गुलामी के बंधन से छुड़ाना है।

पुराने नियम में, छुड़ाने या छुटकारे की कल्पना कई तरह से उपयोग की गई है, जैसेः व्यक्तियों या सम्पत्तियों का छुटकारा जिन्हें कर्ज लेने के लिए बेचा गया था; बंधुवाई या विनाश से छुटकारा, हानि और खतरे से रक्षा, दखलअन्दाज़ी के द्वारा अनचाही परिस्थिति में से छुटकारा (जैसे छुट कारे का दाम) या किसी ऐवजदार के कार्य के द्वारा (जैसे बलिदान करना)।

जब कोई उसकी मूल योजना से या अभिकल्पना से हट जाता है और दासत्व, बंधुवाई या विनाश में पड़ जाता है, तब उसे छुड़ाया, वापस लाया और पुनर्स्थापित किया जाता है उसे हम छुटकारा कहते हैं।

परमेश्वर का स्वभाव छुड़ाने वाला है। परमेश्वर जो कुछ आरंभ करता है उसे वह छोड़ता नहीं। वह अंत तक प्रेम करता है और बचाता है, चाहे उसके लिए जो कीमत देनी पड़े। परमेश्वर हमें छुड़ाने का प्रयास करता है और सब कुछ खुद के लिए वापस पा लेता है। हमें उसके समान बनने के लिए बुलाया गया है, और इसलिए जीवन की परिस्थितियों के प्रति और जिस समस्याओं का हम सामना करते हैं, उनके प्रति हमारा रवैया भी छुड़ाने वाला होना चाहिए।

हमारे लिए परमेश्वर के छुड़ाने वाले हृदय को और वह अपना छुड़ाने का कार्य कैसे करता है और उसमें क्या प्रक्रिया शामिल है यह समझना महत्वपूर्ण है, ताकि हम परमेश्वर के साथ परिश्रम करना सीखें जिससे हम लोगों और जीवन की परिस्थितियों का छुटकारा होते और उन्हें परमेश्वर के पास वापस आते देख सकें।

इफिसियों 1:9,10
[9] कि उसने अपनी इच्छा का भेद उस सुमति के अनुसार हमें बताया जिसे उसने अपने आप में ठान लिया था,
[10] कि समयों के पूरे होने का ऐसा प्रबन्ध हो कि जो कुछ स्वर्ग में है, और जो कुछ पृथ्वी पर है, सब कुछ वह मसीह में एकत्र करे।

ये वचन हमें सिखाता हैं कि परमेश्वर ने कुछ योजना बनाई है। यह योजना तब तक एक रहस्य थी जब तक कि वह नए नियम में प्रकट नहीं हुआ। यह उसकी भली मनसा है जिसकी उसने योजना बनाई, कि जब हम सही समय में आगे बढ़ते हैं, तब स्वर्ग और पृथ्वी की सारी वस्तुएं वापस उसके निकट लाई जाएं। वह सब कुछ जिसे वह पुनर्स्थापित करना चाहता है, पूर्ण रूप से उसमें इकट्ठा किया जाएगा।

इफिसियों 1:10 (मेसेज बाइबल)
एक लम्बे समय की योजना जिसमें सब कुछ इकट्ठा किया जाएगा और उसमें जोड़ दिया जाएगा, प्रत्येक, जो आकाश में है, ओर वह प्रत्येक वस्तु जो पृथ्वी ग्रह पर है।

कुलुस्सियों 1:20 में भी यही सत्य निवेदन किया गया है कि परमेश्वर ने सारी वस्तुओं का अपने साथ मेल करने का एक मार्ग खोजा है जो क्रूस के छुड़ाने वाले कार्य के द्वारा है।

कुलुस्सियों 1:20
और उसके क्रूस पर बहे हुए लहू के द्वारा मेल मिलाप करके, सब वस्तुओं का उसी के द्वारा से अपने साथ मेल कर ले, चाहे वे पृथ्वी पर की हों, चाहे स्वर्ग में की।

कुलुस्सियों 1:20 (मेसेज बाइबल)
इतना ही नहीं, क्योंकि विश्व के सभी टूटे हुए बिखरे हुए टुकड़े-लोग और वस्तुएं, और प्राणी और अणु-सही रीति से, पूर्ण मेल के साथ जुड़ जाते हैं, सब उसकी मृत्यु और क्रूस से उसके लहू के उण्डेले जाने के कारण।

यहां पर जिस मुख्य बात पर हम ज़ोर देना चाहते हैं वह यह है कि यद्यपि लूसिफर के विद्रोह और मनुष्य के पतन के कारण ऐसा लगता है कि सब कुछ बिखर गया है, फिर भी परमेश्वर ने योजना बनाई है और यह देखने के लिए एक मार्ग तैयार किया है कि सब बातें वापस उसके लिए

छुड़ाई जाएं। उसके क्रूस के लहू के द्वारा, पापी मनुष्य को क्षमा मिल गई है और वापस उसका परमेश्वर से मेल हुआ है। शैतान और उसकी दुष्टात्माएं और जिन्होंने मसीह के उद्धार का इन्कार किया है, वे अनंत काल के लिए नरक में अलग किए जाएंगे और नए आकाश और नई पृथ्वी में परमेश्वर की मूल योजना पुनर्स्थापित होगी।

प्रकाशितवाक्य 21:1-5

[1] फिर मैंने नये आकाश और नयी पृथ्वी को देखा, क्योंकि पहला आकाश और पहली पृथ्वी जाती रही थी, और समुद्र भी न रहा।
[2] फिर मैंने पवित्र नगर नए यरूशलेम को स्वर्ग पर से परमेश्वर के पास से उतरते देखा, और वह उस दुल्हन के समान थी, जो अपने पति के लिए सिंगार किए हो।
[3] फिर मैंने सिंहासन में से किसी को ऊंचे शब्द से यह कहते हुए सुना, "देख, परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच में है; वह उनके साथ डेरा करेगा, और वे उसके लोग होंगे, और परमेश्वर आप उनके साथ रहेगा; और उनका परमेश्वर होगा।"
[4] और वह उनकी आंखों से सब आंसू पोंछ डालेगा; और इसके बाद मृत्यु न रहेगी, और न शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी; पहली बातें जाती रहीं।"
[5] और जो सिंहासन पर बैठा था, उसने कहा, देख, मैं सब कुछ नया कर देता हूं! फिर उसने कहा, लिख ले, क्योंकि ये वचन विश्वास के योग्य और सत्य हैं।

परमेश्वर छुड़ाने वाला है। उसका हृदय स्वभावतः छुड़ाने वाला है। वह चाहता है कि सारी वस्तुएं वापस पुनः निरक्षण हों और उसने पहले ही इसकी योजना बनाई है।

पवित्र शास्त्र में छुटकारे की कई तस्वीरें हैं जो परमेश्वर के छुड़ाने वाले हृदय को दर्शाती हैं। हम जल्दी से उसका पुनरीक्षण करेंगे और कुछ महत्वपूर्ण अन्तर्दृष्टियां प्राप्त करेंगे। हमारा उद्देश्य परमेश्वर के छुड़ाने वाले हृदय की झलक पाना है और इसे हममें उत्पन्न होते हुए भी देखना है।

इस्राएली लोगों के साथ परमेश्वर का व्यवहार करने का तरीका

परमेश्वर अपने लोगों का छुड़ाने वाला था और उन दुर्दशाओं से जिनमें वे कई बार उनकी अपनी अनाज्ञाकारिता के कारण गिरते थे, उसने उन्हें कई बार छुड़ाया। उसने उन्हें मिस्र की गुलामी से, बाबुल की बन्धुवाई से, और अन्य शत्रुओं से छुड़ाया।

निर्गमन 6:6
इस कारण तू इस्राएलियों से कह, कि मैं यहोवा हूं, और तुमको मिस्रियों के बोझों के नीचे से निकालूंगा, और उनके दासत्व से तुमको छुड़ाऊंगा, और अपनी भुजा बढ़ाकर और भारी दण्ड देकर तुम्हें छुड़ा लूंगा।

निर्गमन 15:13
अपनी करूणा से तू ने अपनी छुड़ाई हुई प्रजा की अगुवाई की है, अपने बल से तू उसे अपने पवित्र निवासस्थान को ले चला है।

भजन संहिता 78:35
और उनको स्मरण होता था कि परमेश्वर हमारी चट्टान है, और परमप्रधान ईश्वर हमारा छुड़ाने वाला है।

यशायाह की पुस्तक के मुख्य विषयों में से एक है छुटकारा, और वह परमेश्वर का उल्लेख "छुड़ाने वाले के रूप" में 13 बार करती है। छुटकारा मिस्र की गुलामी से छुटकारा (यशायाह 51:10; यशायाह 63:9) और बाबुल की बन्धुवाई से छुटकारा (यशायाह 48:20; यशायाह 52:3,9; यशायाह 62:12) है।

यशायाह 43:1,2
[1] हे इस्राएल तेरा रचनेवाला, और हे याकूब, तेरा सृजनहार यहोवा अब यों कहता है, मत डर, क्योंकि मैंने तुझे छुड़ा लिया है; मैंने तुझे नाम लेकर बुलाया है, तू मेरा ही है। [2] जब तू जल में होकर जाए, मैं तेरे संग संग रहूंगा और जब तू नदियों में होकर चले, तब वे तुझे न डुबा सकेंगी; जब तू आग में चले तब तुझे आंच न लगेगी, और उसकी लौ तुझे न जला सकेगी।

इस्राएली लोग समझ गए और उनके छुड़ाने वाले के रूप में उसके साथ व्यवहार करते थे। अपनी विपत्ति के समय वे उसे पुकारते थे और वह उन्हें छुड़ाता था और उन्हें बचाता था।

भजन संहिता 107:13,14
[13] तब उन्होंने संकट में चहोवा की दोहाई दी, और उसने सकेती से उनका उध्दार किया; [14] उसने उनको अन्धियारे और मृत्यु की छाया में से निकाल लिया; और उनके बन्धनों को तोड़ डाला।

भजन संहिता 107:19,20
[19] तब वे संकट में यहोवा की दोहाई देते हैं, और वह सकेती से उनका उध्दार करता है;
[20] वह अपने वचन के द्वारा उनको चंगा करता और जिस गड़हे में वे पड़े हैं, उससे निकालता है।

भजन संहिता 107:28,29
[28] तब वे संकट में यहोवा की दोहाई देते हैं, और वह उनको सकेती से निकालता है।
[29] वह आंधी को थाम देता है और तरंगें बैठ जाती हैं।

प्रभु हमारा छुड़ाने वाला है! जब हम उसे अपने छुड़ाने वाले के रूप में जानते हैं, तब हम उस पर विश्वास कर सकते हैं कि वह हमें छुड़ाए, हमारे जीवनों की परिस्थितियों में हमें छुड़ाए, और हम उसके छुटकारे के कार्य उन लोगों के जीवनों में भी होते हुए देखते हैं जिनकी हम सेवा करते हैं।

जुबली वर्ष

पुराने नियम में अपने लोगों के सामुदायिक जीवन के भाग के रूप में परमेश्वर ने जुबली वर्ष की स्थापना की, जिसका वर्णन लैव्यव्यवस्था के 25वें अध्याय में पाया जाता है। यह छुटकारे का एक सामर्थी चित्र है। जिस इब्रानी शब्द का अनुवाद "जुबली" किया गया है, उसका अर्थ "तुरही की आवाज़" है जो घोषणा या ऐलान का दर्शक है। यहूदियों में, प्रत्येक 50वां वर्ष जुबली वर्ष होता था। इस वर्ष छुटकारे की घोषणा की जाती थी। इस समय सभी गुलामों को आज़ाद कर दिया जाता था, लोगों को स्वतंत्र किया जाता था कि वे अपने अपने वतन की ओर और परिवारों के पास लौट जाएं, और सारी ज़मीन उनके पहले मालिकों को लौटा दी जाती थी। यह समय बड़े आनन्दोत्सव का होता था।

यहां पर कुछ चुनिंदा वचन हैं जो जुबली वर्ष का वर्णन करते हैं:

लैव्यव्यवस्था 25:10,13,14
[10] और उस पचासवें वर्ष को पवित्र करके मानना, और देश के सारे निवासियों के लिये छुटकारे का प्रचार करना; वह वर्ष तुम्हारे यहां जुबली।
[13] इस जुबली के वर्ष में तुम अपनी अपनी निज भूमि में लौटने पाओगे।
[14] और यदि तुम अपने भाईबन्धु से कुछ मोल लो, तो तुम एक दूसरे पर अन्धेर न करना।

लैव्यव्यवस्था 25:39-41

[39] फिर यदि तेरा कोई भाईबन्धु तेरे सामने कंगाल होकर अपने आपको तेरे हाथ बेच डाले, तो उससे दास के समान सेवा न करवाना।

[40] वह तेरे संग मजदूर वा यात्री की नाईं रहे, और जुबली के वर्ष तक तेरे संग रहकर सेवा करता रहे;

[41] तब वह बालबच्चों समेत तेरे पास से निकल जाए, और अपने कुटुम्ब में और अपने पितरों की निज भूमि में लौट जाए।

जुबली वर्ष की स्थापना करने के द्वारा, परमेश्वर लोगों पर अपना हृदय प्रगट कर रहा था। उसका हृदय लोगों के लिए यह है कि वे छुड़ाए जाएं और उनके हित की मूल स्थिति में लौटाएं जाएं। वह यह इच्छा भी व्यक्त करता था कि उसके लोग भी स्वभाव में छुड़ाने वाले हों, वे लोगों को उनके बंधनों से मुक्त करें और आज़ाद करें।

जब प्रभु यीशु मसीह आया, तब उसने कहा कि वह *"प्रभु के प्रसन्न रहने के वर्ष"* (लूका 4:19) की घोषणा करने आया, जो जुबली वर्ष का उल्लेख है। हम प्रभु के प्रसन्न रहने के वर्ष में रहते हैं, यह जुबली का समय, सबके छुटकारे का समय और पुनर्स्थापन का समय है।

छुड़ाने वाला कुटुम्बी

छुड़ाने वाले कुटुम्बी की कल्पना और प्रथा, जो पुराने नियम में परमेश्वर ने अपने लोगों के मध्य स्थापित की थी, छुटकारे का दूसरा सामर्थी चित्र था।

उसका मूल उपयोग व्यक्तियों और सम्पत्ति के छुटकारे से था जो कर्ज़ के रूप में बेच दिया गया हो, जैसा कि लैव्यव्यवस्था 25:25 में वर्णन किया गया है।

लैव्यव्यवस्था 25:25

यदि तेरा कोई भाईबन्धु कंगाल होकर अपनी निज भूमि में से कुछ बेच डाले, तो उसके कुटुम्बियों में से जो सबसे निकट हो वह आकर अपने भाईबन्धु के बेचे हुए भाग को छुड़ा ले।

यदि वह मनुष्य जो निर्धन हो गया और उसने अपनी सम्पत्ति बेच दी, परंतु बाद में वह सम्पन्न होता है और जो उसने पहले बेचा था, उसे वापस खरीदने के लिए उसके पास पर्याप्त धन हो, तो वह मनुष्य स्वयं उसे छुड़ा सकता था (लैव्यव्यवस्था 25:26,27)। निर्धन मनुष्य खुद को अपने संगी इस्राएली को बेच सकता था (लैव्यव्यवस्था 25:39) या इस्राएल में रहने वाले विदेशी के पास भी (लैव्यव्यवस्था 25:47)। उसे छुड़ाने की ज़िम्मेदारी (वास्तव में विकल्प) करीबी रिश्तेदार की होती थी—भाई, चाचा, चाचा का बेटा, या उसके परिवार के खून के रिश्तेदार (लैव्यव्यवस्था 25:25,48,49)।

आर्थिक मुश्किलों में फसे व्यक्ति को जो व्यक्ति (कुटुम्बी) छुड़ाता था, उसे छुड़ाने वाला कुटुम्बी कहा जाता था। छुड़ाने वाला कुटुम्बी अपने निकट सम्बंधी की खराई, जीवन, सम्पत्ति और परिवार के नाम की रक्षा करने की ज़िम्मेदारी रखता था, या उसकी हत्या के लिए न्याय करने की।

रूत की पुस्तक छुड़ाने वाले कुटुम्बी की एक सुंदर कहानी है।

यहूदा देश में पड़े अकाल की वजह से एलिमेलेक और उसकी पत्नी नाओमी, और उसके दो बेटे महलोन और किल्योन बेतलेहेम से निकलकर मोआब देश में जाकर रहने लगे। इस दौरान एलिमेलेक की मृत्यु हो गई। नाओमी अपने दो बेटों का व्याह मोआबी स्त्रियों से करा दिया, उनमें से एक का नाम था ओर्पा और दूसरी का रूत था। करीब दस वर्षों के बाद नाओमी के दोनों बेटे निःसंतान मर गए। इसलिए उसने अपनी बहुओं से बिनती की कि वे वापस अपने देश लौट जाएं, ब्याह कर लें और जीवन में आगे बढ़ जाएं। ओर्पा ने ऐसा ही किया, परंतु रूत ने अपनी सास के साथ रहने का निर्णय लिया। यह एक अत्यंत साहसपूर्ण फैसला था, क्योंकि नाओमी के पास रूत को देने के लिए कुछ भी नहीं था। जब नाओमी ने रूत को उसके साथ यहूदा प्रांत को जाने से रोकने का प्रयास किया, तब रूत ने एक ऐसा बयान दिया जो उसके समर्पण का वर्णन करता हैः "*रूत बोली, तू मुझ से यह बिनती न कर, कि मुझे त्याग वा छोड़कर लौट जा; क्योंकि जिधर तू जाए उधर मैं भी टिकूंगी; तेरे लोग मेरे लोग होंगे, और तेरा परमेश्वर मेरा*

परमेश्वर होगा; जहां तू मरेगी वहां मैं भी मरूंगी, और वहीं मुझे मिट्टी दी जाएगी। यदि मृत्यु छोड़ और किसी कारण मैं तुझसे अलग होऊ, तो यहोवा मुझसे वैसा ही वरन उससे भी अधिक करे" (रूत 1:16,17)।

नाओमी और रूत वापस बेतलेहेम को लौट आए। यह जौ की कटनी का समय था। पूरे नगर में रूत के बारे में चर्चा फैल गई, जो कि एक विदेशी, मोआबी महिला थी, और उसके समर्पण के विषय में लोग बातें करने लगे जो अपनी सास के साथ बनी रही और उसके साथ बेतलेहेम को आई। नाओमी और रूत को अपने जीवन की नई शुरुआत करनी पड़ी, उन्हें बेतलेहेम में अपने जीवनों को फिर से खड़ा करना पड़ा। रूत को उस प्रयोजन का लाभ उठाना पड़ा जो परमेश्वर ने निर्धन लोगों के लिए किया था, वह खेतों के कोनों से बचा हुआ अनाज इकट्ठा करने लगी। जब रूत कटनी करने वालों के पीछे पीछे खेत में अनाज बीनने लगी, तब वह बीनते बीनते खेत के उस हिस्से में पहुंच गई जो बोअज का था। बोअज़ एलिमेलेक के परिवार से था, जो रूत का ससुर था, और उस समय रूत इस विषय में नहीं जानती थी। बोअज ने रूत पर मेहरबानी की और उसे प्रोत्साहन दिया कि वह उसके खेत से अनाज बिने। रूत ने नाओमी को बताया कि वह बोअज नामक एक व्यक्ति के खेत में अनाज बिन रही थी। नाओमी ने बोअज को पहचान लिया और रूत को बताया कि बोअज़ उनका सम्भवनीय छुड़ाने वाला कुटुम्बी है और उसक बाद उसे समझाया कि वह बोअज को छुड़ाने वाले कुटुम्बी के रूप में उसकी भूमिका अदा करने के लिए निवेदन करे।

रूत 2:20 (मेसेज बाइबल)
नाओमी ने अपनी बहू से कहा, वह यहोवा की ओर से आशीष पाए, परमेश्वर ने हमें बिल्कुल छोड़ा नहीं है! वह हमसे अब भी प्रेम करता है, बुरे समयों में भी और अच्छे समय में भी! नाओमी ने आगे कहा, वह पुरुष तो वाचा के अनुसार हमारा छुड़ाने वाला कुटुम्बी है, हमारा सगा रिश्तेदार!

रूत ने जब बोअज को निवेदन किया, तब छुड़ाने वाले कुटुम्बी के रूप में अपनी भूमिका निभाने के लिए वह आगे बढ़ा। बोअज ने पहले अपने सबसे नज़दीकी रिश्तेदार से पूछा, जो छुड़ाने वाले कुटुम्बियों की पहली कतार में था, कि क्या वह अपनी ज़िम्मेदारी निभाने के लिए तैयार है। *"फिर*

बोअज ने कहा, जब तू उस भूमि को नाओमी के हाथ से मोल ले, तब उसे रूत मोआबीन के हाथ से भी जो मरे हुए की स्त्री है इस मनसा से मोल लेना पड़ेगा, कि मरे हुए का नाम उसके भाग में स्थिर कर दे" (रूत 4:5)। नाओमी की एक बहू थी जो विधवा थी, और छुड़ाने वाले कुटुम्बी का कर्तव्य यह था कि वह न केवल नाओमी का खेत खरीद ले, परंतु अपने भाई की विधवा से ब्याह करके संतान उत्पन्न करे। छुड़ाने वाला कुटुम्बी भूमि को छुड़ाने के अपने अधिकार को तब तक पूरा नहीं कर पाता था, जब तक कि वह अपने भाई की विधवा से विवाह करने के लिए तैयार न हो। जो रिश्तेदार कतार में पहले था, उसने छुड़ाने वाले कुटुम्बी के रूप में अपनी भूमिका निभाने से इन्कार किया। इसलिए बोअज़ ने कदम बढ़ाया, नाओमी की जमीन छुड़ा ली और रूत से ब्याह भी कर लिया।

जो रूत यहूदी नहीं थी, जो विदेशी थी, जो मोआबी स्त्री थी, जिसका सबकुछ खो चुका था (पति नहीं, बच्चे नहीं) और जिसके पास कुछ नहीं था (वह अपना देश और लोगों को छोडकर अपनी सास के साथ चली आई थी), उसके लिए कुटुम्बी छुड़ाने वाले कदम बढ़ाया और उसे आदर, प्रतिष्ठा, परिवार, पद, और वह सबकुछ फिर से लौटा दिया जिसकी वह इच्छा रखती थी। और इन सारी बातों से परे, छुड़ाने वाले कुटुम्बी के कार्य की वजह से, रूत प्रभु यीशु मसीह के वंश में आ गई (मत्ती 1:5)।

उड़ाऊ पुत्र की कहानी

उड़ाऊ पुत्र की कहानी (लूका 15:11-24) सबके लिए परिचित है। यद्यपि हम इस कहानी में छुटकारे के सारे उपादान नहीं देखते (छुटकारे का दाम), फिर भी हम पिता का हृदय देखते हैं जो अपने बेटे के लौटने की इच्छा रखता है। हम देखते हैं कि भले ही कितनी ही बुराई की गई, फिर भी पिता का हृदय यह देखना चाहता था कि उसका बेटा छुड़ाया जाए और वापस लौट आए। हम केवल कल्पना कर सकते हैं कि पिता रोज़ अपने घर के द्वार पर खड़े होकर अपने गुमराह बेटे के लौटने का इंतजार करता होगा। और पिता के हृदय और मन में बदले, दण्ड या अपमान के विचार नहीं है, परंतु प्रेम, पुनर्स्थापन, क्षमा, और उत्सव के विचार हैं। जब पुत्र लौटता है,

तब यही होता है। पिता क्षमा करता है, बेटे को वापस लेता है और उसके आने का उत्सव मनाता है। यह कहानी परमेश्वर, हमारे सनातन पिता के हृदय को प्रगट करती है जो हमारे लिए है। हमारे पिता का हृदय स्वभावतया छुड़ाने वाला है और वह देखना चाहता है कि हमें क्षमा मिल जाए, हम चंगे हों, और फिर से पूर्वस्थिति प्राप्त करें।

छुटकारे की बड़ी योजना

छुटकारे की सबसे बड़ी कहानी अर्थात् मानवजाति के लिए परमेश्वर की छुटकारे की योजना है। हमारे सारे पापों के बावज़ूद, परमेश्वर हमारा सृजनहार है, जो हमारे न्यायी के रूप में विराजमान है, वह स्वयं हमारा छुड़ाने वाला और उद्धारकर्ता बन गया। हम जो पाप के द्वारा उसके शत्रु बन गए थे, उन्हें उसने वापस अपनी ओर लाकर खुद से मेल करा लिया, और हमें पूर्ण रूप से पुनर्स्थापित किया और हमें उसकी दृष्टि में पवित्र और निर्दोष बना दिया है। ऐसा उसने पूर्ण रूप से किया। उसने यह हमारे लिए सम्भव बनाया, और प्रत्येक व्यक्ति को निमंत्रण देता है कि उसके पुत्र यीशु मसीह में व्यक्तिगत् रूप से विश्वास करने के द्वारा वह इसे अपना अनुभव बनाए।

कुलुस्सियों 1:20-22

[20] और उसके क्रूस पर बहे हुए लहू के द्वारा मेल मिलाप करके, सब वस्तुओं का उसी के द्वारा से अपने साथ मेल कर ले, चाहे वे पृथ्वी पर की हों, चाहे स्वर्ग में की।
[21] और उसने अब उसकी शारीरिक देह में मृत्यु के द्वारा तुम्हारा भी मेल कर लिया जो पहले निकाले हुए थे और बुरे कामों के कारण मन से बैरी थे,
[22] ताकि तुम्हें अपने सम्मुख पवित्र और निष्कलंक, और निर्दोष बनाकर उपस्थित करे।

परमेश्वर के प्रेम की कोई सीमाएं नहीं हैं। उस प्रेम से जो वह हमारे लिए रखता है, कोई भी बात हमें अलग नहीं कर सकती। एक व्यक्ति कितना ही बिगड़ा हुआ क्यों न हो, उसके पाप कितने ही अंधकारमय हों, वह कितना ही दूर क्यों न भटक गया हो, वह कितना ही बर्बाद क्यों न हो गया हो, उसने खुद पर कितने ही घाव क्यों न कर लिए हो, फिर भी परमेश्वर उससे प्रेम करता है और चाहता है कि उसका छुटकारा हो।

रोमियों 8:38,39
[38] क्योंकि मैं निश्चय जानता हूं कि न मृत्यु, न जीवन, न स्वर्गदूत, न प्रधानताएं, न वर्तमान, न भविष्य, न सामर्थ, न ऊंचाई,
[39] न गहिराई और न कोई और सृष्टि हमें परमेश्वर के प्रेम से, जो हमारे प्रभु मसीह यीशु में है, अलग कर सकेगी।

वह पूर्ण रूप से बचाता है। व्यक्ति चाहे पाप और अधर्म की अत्यंत निम्न अवस्था में भी क्यों न गिर गया हो, वह उन्हें छुड़ाना और बचाना चाहता है।

इब्रानियों 7:25
इसी लिए जो उसके द्वारा परमेश्वर के पास आते हैं, वह उनका पूरा पूरा उद्धार कर सकता है, क्योंकि वह उनके लिए बिनती करने को सर्वदा जीवित है।

परमेश्वर के छुड़ाने वाले हृदय को अपनाना

परमेश्वर का स्वभाव छुड़ाने वाला है। जो कार्य वह आरम्भ करता है उसे अधूरा नहीं छोड़ता। वह पूर्ण रूप से प्रेम करता और छुड़ाता है, फिर उसे चाहे जो कीमत चुकानी पड़े। हमें उसके समान बनने के लिए बुलाया गया है, और इसलिए जीवन की परिस्थितियों के प्रति और जिन समस्याओं का हम सामना करते हैं, उनके प्रति हमारा रवैय्या भी छुड़ाने वाला हो।

जब हम लोगों को, जीवन की परिस्थितियों को, और अन्य बातों को बिगड़ी हुई हैं, देखते हैं, तो हमें उनकी ओर परमेश्वर के छुड़ाने वाले हृदय से देखने की ज़रूरत है।

यदि किसी मित्र ने या ऐसे किसी व्यक्ति ने जिसे आप जानते हैं, अपने जीवन को बर्बाद कर दिया है, और उसके पास अब कोई आशा नहीं बची, तो उनकी ओर परमेश्वर के छुड़ाने वाले हृदय के रूप में देखें। वहां आशा है।

यदि बेटा या बेटी भटक गए हैं, तो उनकी ओर परमेश्वर के छुड़ाने वाले हृदय से देखें। परमेश्वर उन्हें वापस ला सकता है।

यदि आपका वैवाहिक जीवन या घर टूट रहा है, तो उसकी ओर परमेश्वर के छुड़ाने वाले हृदय से देखें। परमेश्वर आपके विलाप को नृत्य में बदल देगा।

यदि आपका अपना जीवन या नौकरी या पैसा या कुछ और अच्छे से बुरा हो गया है और बुरे से और भी बुरा हो गया है, तो आपके लिए परमेश्वर के छुड़ाने वाले हृदय में विश्वास रखें। परमेश्वर लोगों को दलदल की कीच से निकालता है और उन्हें मज़बूत भूमि पर खड़ा करता है।

यदि आपका सपना आपकी आंखों के सामने टूटता हुआ नज़र आता है, फिर भी परमेश्वर आपका छुड़ाने वाला है। वह मरे हुए को जीवन देता है।

व्यक्तिगत लागूकरण

1) क्या मेरे जीवन में ऐसे लोग या परिस्थितियां हैं जिनकी ओर मुझे परमेश्वर के छुड़ाने वाले हृदय से देखने की ज़रूरत है?

2) क्या मैं परमेश्वर की छुड़ाने वाली सामर्थ में विश्वास करता हूं कि वह उन्हें या उनकी परिस्थितियों को छुड़ाएगा?

2
परमेश्वर के छुड़ाने वाले कार्य का स्वरूप

भजन संहिता 103 अत्यंत परिचित भजन है। उसके कई लाभ जो परमेश्वर हमें देता है उनमें से एक अंश है विनाश से हमारे जीवन को छुड़ाना।

भजन संहिता 103:1-6

[1] हे मेरे मन, यहोवा को धन्य कह; और जो कुछ मुझ में है, वह उसके पवित्र नाम को धन्य करे!
[2] हे मेरे मन, यहोवा को धन्य कह, और उसके किसी उपकार को न भूलना।
[3] वही तो तेरे सब अधर्म को क्षमा करता, और तेरे सब रोगों को चंगा करता है,
[4] वही तो तेरे प्राण को नाश होने से बचा लेता है, और तेरे सिर पर करुणा और दया का मुकुट बान्धता है,
[5] वही तो तेरी लालसा को उत्तम पदार्थों से तृप्त करता है, जिस से तेरी जवानी उकाब की नाईं नई हो जाती है।
[6] यहोवा सब पिसे हुओं के लिये धर्म और न्याय के काम करता है।

यहां पर कुछ घोषणाएं हैं, जिनके द्वारा परमेश्वर जो हमारा छुड़ाने वाला है, उनका हम वर्णन कर सकते हैं।

- मेरा छुड़ाने वाला जीवित है (अय्यूब 19:25)।
- यहोवा जो इस्राएल का राजा है वह मेरा छुड़ाने वाला है, वही सबसे पहला और वही अंत तक है (यशायाह 44:6)।
- मेरा छुड़ाने वाला सारी पृथ्वी का परमेश्वर है (यशायाह 54:5)।
- समस्त संसार मेरे छुड़ाने वाले के हाथ में हैं (यशायाह 44:24)।
- मेरा छुड़ाने वाला सामर्थी है; सेनाओं का यहोवा यह उसका नाम है (यिर्मयाह 50:34)।

- मेरा छुड़ाने वाला हमारा पिता है, वह प्राचीन काल से है (यशायाह 63:16)।
- परमेश्वर हमारी चट्टान है, और परमप्रधान परमेश्वर हमारा छुड़ाने वाला है (भजन संहिता 78:35)।
- मेरा छुड़ाने वाला दया करता है और मुझ पर अनंत करूणा से दया करता है (यशायाह 54:8)।
- इस्राएल का पवित्र मेरा छुड़ाने वाला है और वह मेरी सहायता करेगा (यशायाह 41:14)।
- मेरा छुड़ाने वाला सामर्थी है, वह मेरा मुकद्धमा लड़ेगा (नीतिवचन 23:11; यिर्मयाह 50:34)।
- यहोवा जो मेरा छुड़ाने वाला है वह मुझे सफलता के लिए शिक्षा देता है और जिस मार्ग से मुझे जाना है उसमें मुझे ले चलता है (यशायाह 48:17)।
- मेरा छुड़ाने वाला सारी बातों को मेरे पक्ष में कर देता है और अनपेक्षित बातों को उत्पन्न करता है (यशायाह 49:26; यशायाह 60:16)।

यहोवा मेरा छुड़ाने वाला है। इस अध्याय में, हम परमेश्वर के छुड़ाने वाले कार्य के विषय में परमेश्वर के स्वभाव का कुछ ज्ञान पाते हैं। विशिष्ट तौर पर उसमें क्या है और वह अपना छुड़ाने वाला कार्य कैसे पूरा करता है।

परमेश्वर के छुड़ाने वाले कार्य की प्रेरणा उसका निरंतर अटल प्रेम है जिसकी कोई सीमाएं नहीं

पुराने नियम में, हम परमेश्वर के लोगों को बार बार परमेश्वर से दूर जाते हुए देखते हैं और परमेश्वर कई तरह से उन्हें वापस अपने निकट लाने का प्रयास करता है। कभी-कभी परमेश्वर उन्हें चेतावनी देने के लिए, उन्हें सुधारने के लिए और उन्हें वापस परमेश्वर के पास लाने के लिए भविष्यवक्ताओं को खड़ा करता है। अन्य समयों में, वह उन्हें बंधुवाई या कठिनाइयों के समयों को सहने की अनुमति देता है ताकि उन्हें वापस लौटा लाएं।

परंतु इन सारी बातों में, हम परमेश्वर के छुड़ाने वाले कार्य को देखते हैं जो अपने लोगों के लिए अत्यधिक प्रेम से पूरा करता है। हम दो अनुच्छेदों पर विचार करेंगे:

यिर्मयाह 31:1-4

"[1] उन दिनों में मैं सारे इस्राएली कुलों का परमेश्वर ठहरूंगा और वे मेरी प्रजा ठहरेंगे, यहोवा की यही वाणी है।"

[2] यहोवा यों कहता है: "जो प्रजा तलवार से बच निकली, उन पर जंगल में अनुग्रह हुआ; मैं इस्राएल को विश्राम देने के लिये तैयार हुआ।"

[3] "यहोवा ने मुझे दूर से दर्शन देकर कहा है। मैं तुझ से सदा प्रेम रखता आया हुं; इस कारण मैंने तुझ पर अपनी करूणा बनाए रखी है।

[4] हे इस्राएली कुमारी कन्या! मैं तुझे फिर बसाऊंगा; वहां तू फिर सिंगार करके डफ बाजने लगेगी, और आनन्द करनेवालों के बीच में नाचती हुई निकलेगी।

यद्यपि परमेश्वर अपने लोगों को यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा बाबुल के हाथों आने वाली विपत्ति और बंधुवाई के विषय में चेतावनी दे रहा था, फिर भी परमेश्वर ने उन्हें अपने प्रेम का आश्वासन दिया। वह उन लोगों के विषय में बोलता है जो जंगल में अनुग्रह पाएंगे, वह अपने लोगों के प्रति उसके सनातन प्रेम के विषय में बोलता है और वह उन्हें आश्वासन देता है कि वह उन्हें फिर बनाएगा और फिर नया करेगा।

होशे 14:1-7

[1] हे इस्राएल, अपने परमेश्वर यहोवा के पास लौट आ, क्योंकि तूने अपने अधर्म के कारण ठोकर खाई है।

[2] बातें सीखकर और यहोवा की ओर फिरकर, उससे कह, सब अधर्म दूर कर; अनुग्रह से हमको ग्रहण कर; तब हम धन्यवाद रूपी बलि चढ़ाएंगे।

[3] अश्शूर हमारा उद्धार न करेगा, हम घोड़ों पर सवार न होंगे; और न हम फिर अपनी बनाई हुई वस्तुओं से कहेंगे, तुम हमारे ईश्वर हो; क्योंकि अनाथ पर तू ही दया करता है।

[4] मैं उनकी भटक जाने की आदत को दूर करूंगा; मैं सेंतमेंत उनसे प्रेम करूंगा, क्योंकि मेरा क्रोध उन पर से उतर गया है।

[5] मैं इस्राएल के लिये ओस के समान हूंगा; वह सोसन की नाईं फूले-फलेगा, और लबानोन की नाईं जड़ फैलाएगा।

[6] उसकी जड़ से पौधे फूटकर निकलेंगे; उसकी शोभा जलपाई की सी और उसकी सुगन्ध लबानोन की सी होगी।
[7] जो उसकी छाया में बैठेंगे, वह अन्न की नाईं बढ़ेंगे, वे दाखलता की नाईं फूल-फलेंगे; और उसकी कीर्ति लबानोन के दाखमधु की सी होगी।

होशे ने ऐसे समय के दौरान भविष्यद्वाणी की जब इस्राएल राष्ट्र के रूप में उन्नति कर रहा था। परंतु लोग आत्मिक रीति से भटक गए थे और परमेश्वर से दूर हो गए थे। यहां भी, हम देखते हैं कि होशे परमेश्वर के लोगों को जो संदेश दे रहा है, उसमें वह उन्हें वापस अपने निकट आने का निमंत्रण देता है। वह उन्हें आश्वासन की प्रवृत्ति देता है कि वह उनसे अशर्त प्रेम करता है; वह उनके पीछे हट जाने की प्रवृत्ति को चंगा करेगा और उन्हें वापस लौटा लाएगा।

परमेश्वर की छुटकारे की बड़ी योजना परमेश्वर के अटल प्रेम से प्रेरित है।

रोमियों 5:8
परंतु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस प्रकार प्रगट करता है कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिए मरा।

प्रेम, परमेश्वर का अपने लोगो के प्रति प्रेम, परमेश्वर के लिए मुख्य प्रेरणा है जिससे वह उन्हें छुड़ाता, पुनर्स्थापित करता, पुनर्निर्माण करता, और पुनर्जीवित करता है। वह सनातन प्रेम से प्रेम करता है। वह अशर्त्त प्रेम करता है। हमें हमारे प्रति परमेश्वर के प्रेम में सुरक्षित रहना सीखने की ज़रूरत है। कभी-कभी हम खुद को जिन परिस्थितियों में पाते हैं, वे हमारी ही गलतियों का परिणाम होती हैं। हम भटक गए और परमेश्वर से दूर हो गए। हमने विद्रोह किया और पाप में जीवन बिताने लगे। हमने अपने जीवनों को बर्बाद किया। परंतु अब, जब हम परमेश्वर की ओर से फिर जाते हैं और उसकी ओर देखते हैं कि वह हमारी दशा से हमें छुड़ाए, *"तो हम ऐसा कर सकते हैं इसका कारण यह है कि वह अब भी हमसे प्रेम करता है। वह हमसे प्रेम करता है, चाहे हमने कितना ही बुरा काम क्यों न किया हो और कितने ही बुरे क्यों न बन गए हों। और हमारे प्रति उसके प्रेम के*

कारण वह हमें छुड़ाएगा। हम मिट नहीं गए; यह यहोवा की महाकरूणा का फल है, क्योंकि उसकी दया अमर है। प्रति भोर वह नई होती रहती है; तेरी सच्चाई महान है। मेरे मन ने कहा, यहोवा मेरा भाग है, इस कारण मैं उसमें आशा रखूंगा। जो यहोवा की बाट जोहते और उसके पास जाते हैं, उनके लिए यहोवा है" (विलापगीत 3:22-25)।

उसी तरह, जब हम अपने आसपास के लोगों के जीवनों में परमेश्वर के छुटकारे के काम में उसके साथ मिलकर परिश्रम करते हैं, तब हमें परमेश्वर सदृश प्रेम में चलना सीखना है। हमें उनसे बिनशर्त, सनातन परमेश्वर के अशर्त्त प्रेम से प्रेम करना है। अर्थात, हम यह स्वयं नहीं कर सकते। हमें आत्मा ने सामर्थ दी है कि हम परमेश्वर के प्रेम में चलें (रोमियों 5:5; गलातियों 5:22)। जब हम हमारे आस पास के लोगों में परमेश्वर के छुटकारे के काम को होते हुए देखने के लिए परिश्रम करते हैं, तब हमारे हृदयों में इस प्रकार का प्रेम क्षमा को जन्म देता है, धीरज को सक्षम बनाता है, दया को प्रगट करता है (1 कुरिन्थियों 13:4-8)।

परमेश्वर के छुटकारे का कार्य अलौकिक है परंतु उसमें हमारा साथ में परिश्रम करना शामिल है

परमेश्वर सर्वशक्तिमान, सर्वसामर्थी है और उसके लिए कुछ भी असंभव नहीं। वह अत्यंत निराशाजनक परिस्थितियों को भी बदल सकता है। वह उन बातों को पुनःस्थापित कर सकता है और उनका पुनःनिर्माण कर सकता है जो बातें पूर्ण रूप से नाश हो गई हैं। वह हमारी अधिकतर गंभीर गलतियों से अधिक महान है। वह उस समय से बड़ा है जो हो सकता है कि खो गया हो और उस समय को पुनःप्राप्त कर सकता है। उसके छुटकारे के कार्य में, परमेश्वर की अलौकिक सामर्थ परिस्थितियों को बदल देती है। परमेश्वर हमें और हमारी परिस्थिति को छुड़ाने के लिए अपना हाथ आगे बढ़ाता है, परंतु हमें हमारे जीवनों में उसके छुटकारे के कार्य को ग्रहण करने के लिए उसे उत्तर देना है और उसके साथ मि लकर परिश्रम करना है। उदाहरण के रूप में, जब हम पश्चाताप करते हैं, विश्वास का उपयोग करते हैं, और हमारे जीवनों के एक या अधिक क्षेत्रों में छुटकारा और

पुनःस्थापन देखने के लिए धीरज से आगे बढ़ते हैं, तब हम परमेश्वर के छुटकारे के कार्य को प्राप्त करते हैं।

पश्चाताप

पश्चाताप करना वास्तव में अपने मन में बदलाव लाना है। इसका अर्थ यह है कि इससे पहले मैंने एक निश्चित मार्ग के विषय में सोचा था, परंतु अब मैं इस रीति से सोचता हूं जो मेरी पिछली विचारधारा के बिल्कुल विपरीत है। यह बदलाव ऐसा है कि वह पूर्ण रूप से फिर जाना है, हमारी पिछली विचार शैली के बिल्कुल विरूद्ध। इस प्रकार पश्चाताप मन का परिवर्तन है जिसका परिणाम जीवन के पिछले मार्ग से फिर जाना होता है, उस ओर जो पूर्ण रूप से भिन्न है। विचार शैली में इस परिवर्तन का परिणाम फिर हमारे क्रियाओं में, हमारी बातों में, हमारी प्रतिक्रियाओं में, और हमारी पिछली मनोदशा के अंतर्गत जो कुछ हम करते थे, उसमें बदलाव होता है। परमेश्वर अपनी भलाई के द्वारा हमें पश्चाताप के स्थान में लाता है।

क्या तू उसकी दया, और सहनशीलता, और धीरजरूपी धन को तुच्छ जानता है? और क्या यह नहीं समझता कि परमेश्वर की दया तुझे मन फिराव सिखाती है? (रोमियों 2:4)।

पश्चाताप करने की और पश्चाताप के द्वारा जो परिवर्तन आया है उसका अनुसरण करने की हमारी अनिच्छा हमें परमेश्वर के अलौकिक छुट कारे के कार्य को अनुभव करने से रोकती है।

विश्वास

हमें छुड़ाने के लिए वह क्या कर सकता है इसमें हमें विश्वास होना चाहिए। परिस्थिति की गंभीरता, हताशा और लाचारी, भले ही वास्तविक हो, परंतु हमारे छुड़ाने वाले में हमारे विश्वास को कमज़ोर न करने पाए। हमारे परिस्थितियों के पेचीदापन और गंभीरता से परमेश्वर बड़ा है। परमेश्वर उस समय से बड़ा है जो हमने बर्बाद किया है, और वह समय को फिर लौटा सकता है।

भजन संहिता 27:13
यदि मुझे विश्वास न होता कि जीवितों की पृथ्वी पर यहोवा की भलाई को देखूंगा, तो मैं मूर्च्छित हो जाता है।

परमेश्वर हमारे जीवनों में जो छुटकारे का कार्य लाने की इच्छा रखता है, उसकी पूर्णता में हम विश्वास से यात्रा करते हैं। विश्वास निष्क्रिय नहीं है। विश्वास निकम्मापन नहीं है। विश्वास का अर्थ जिन बातों का छुटकारा और पुनर्स्थापन हम देखना चाहते हैं, उसे देखने के लिए परमेश्वर हमसे जो करवाना चाहता है, उसे करना। उदाहरण के तौर पर, यदि हमारी आर्थिक परिस्थिति ठीक नहीं है, हमारा बहुत सारा धन कर्ज़ में और अन्य आर्थिक विपदाओं में बर्बाद हो गया है, तो हम परमेश्वर की ओर देखते हैं, वह जो हमें हमारी सारी मुश्किलों से छुड़ा सकता है। विश्वास से हम खुद को इन आर्थिक मुश्किलों से पूर्ण रूप से छुटकारा पाते हुए देखते हैं, और यह केवल उसके छुटकारे के कार्य के कारण है। उसके बाद हम धीरे धीरे उन बातों को करने लगते हैं, जिसे करने की ज़रूरत है। परमेश्वर इस परिस्थिति से हमें जिस तरह से बाहर निकालेगा, वह तरीका है, नौकरी के लिए परमेश्वर पर विश्वास करना। हम कमाने लगते हैं। उसके बाद हम अपना कर्ज़ अदा करने लगते हैं। और उसके बाद हम परमेश्वर की आशीष का हाथ हमें बहुतायत में उठाते हुए देखते हैं। इस सम्पूर्ण प्रक्रिया के दौरान, हम विश्वास से उसकी ओर देखते हैं कि वह हमारी सम्पत्ति में पूर्ण छुटकारे का कार्य करे।

युद्ध में व्यस्तता के उपरांत, जब दाऊद ज़िकलाग नगर को लौटा, तब उसने पाया कि अमालेकियों ने ज़िकलाग पर आक्रमण किया है और दाऊद की पत्नियों को और उसके सेवकों की पत्नियों को बंधुवा बनाकर ले गए हैं (1 शमुएल 30:1,2)। दाऊद ने खुद को प्रभु में उत्साहित किया, प्रार्थना की, और प्रभु की इच्छा जानी। परमेश्वर ने दाऊद से बातें की और उसे आज्ञा दी कि वह अमालेकियों का पीछा करे और उससे प्रतिज्ञा की कि दाऊद सबकुछ फिर वापस पा लेगा (1 शमुएल 30:8)। परंतु उठकर शत्रु का पीछा करने के लिए दाऊद को साहस और विश्वास की ज़रूरत

पड़ी। विश्वास से, जैसा कि इब्रानियों की पुस्तक में लिखा है, *"वे निर्बलता में बलवंत हुए; लड़ाई में वीर निकलें"* (इब्रानियों 11:34), उन्होंने शत्रु का पीछा किया और सचमुच सबकुछ वापस पा लिया।

धीरज

परमेश्वर में विश्वास के साथ हमेशा धीरज होना चाहिए। धीरज के लिए समय की ज़रूरत होती है। धीरज वह करने की योग्यता है जो समय रहते हमें करना चाहिए। जब परमेश्वर का छुटकारे का कार्य हमारे जीवन में प्रगट होना आरम्भ होता है, तब हमें हर ऋतु में उसके साथ धीरज से चलना है। हम में से कई लोग फौरन काम चाहते हैं। जी हां, कभी-कभी कुछ बातें पूर्ण रूप से "अचानक" बदल जाती हैं। जब ऐसा होता है, तब यह अद्‌भुत बात है। परंतु अधिकतर समय, परमेश्वर के छुटकारे का कार्य पूरा होने में कुछ समय लग जाता है, और उस कार्य को पूरा होते हुए देखने के लिए हमें धीरज के साथ विश्वास में उसके संग चलना है। अक्सर, कोई बात "अचानक" होने के बजाए, जब उस यात्रा से धीरे धीरे गुज़रते हैं, तब हम परमेश्वर के विषय में और सीखते हैं और बल पाते हैं। भजन के लेखक ने खुद को एक भयानक गड्‌हे में पाया। फिर भी अपने मन में विश्वास और धीरज रखकर वह प्रभु की ओर देखता रहा।

भजन संहिता 40:1-3

[1] मैं धीरज से यहोवा की बाट जोहता रहा; और उसने मेरी ओर झुककर मेरी दोहाई सुनी।

[2] उस ने मुझे सत्यानाश के गड़्हे और दलदल की कीच में से उबारा, और मुझ को चट्टान पर खड़ा करके मेरे पैरों को दृढ़ किया है।

[3] और उस ने मुझे एक नया गीत सिखाया जो हमारे परमेश्वर की स्तुति का है। बहुतेरे यह देखकर डरेंगे, और यहोवा पर भरोसा रखेंगे।

हमारे छुटकारे की ओर धीरज के साथ परमेश्वर के संग यात्रा करने का एक भाग है अतीत को छोड़े देने की हमारी इच्छा। उसके छुटकारे

का अनुभव करने हेतु, हमें अतीत को छोड़ने के लिए तैयार रहना चाहिए। उदाहरण के तौर पर, इस्राएलियों का विचार करें, जब परमेश्वर उन्हें वाचा के देश में ले जाने के लिए मिस्र से बाहर ले आया। उसने उनसे कुछ अद्‌भुत प्रतिज्ञाएं कीः

निर्गमन 6:6-8

[6] इस कारण तू इस्राएलियों से कह, कि मैं यहोवा हूं, और तुमको मिस्रियों के बोझों के नीचे से निकालूंगा, और उनके दासत्व से तुमको छुड़ाऊंगा, और अपनी भुजा बढ़ाकर और भारी दण्ड देकर तुम्हें छुड़ा लूंगा।
[7] और मैं तुमको अपनी प्रजा बनाने के लिये अपना लूंगा, और मैं तुम्हारा परमेश्वर ठहरूंगा; और तुम जान लोगे कि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं जो तुम्हें मिस्रियों के बोझों के नीचे से निकाल ले आया।
[8] और जिस देश के देने की शपथ मैंने इब्राहीम, इसहाक, और याकूब से खाई थी उसी में मैं तुम्हें पहुंचाकर उसे तुम्हारा भाग कर दूंगा।

लैव्यव्यवस्था 26:13

मैं तो तुम्हारा वह परमेश्वर यहोवा हूं, जो तुम को मिस्र देश से इसलिये निकाल ले आया कि तुम मिस्रियों के दास न बने रहो; और मैंने तुम्हारे जुए को तोड़ा है, और तुमको सीधा खड़ा करके चलाया है।

यद्यपि परमेश्वर अपने लोगों को प्रतिज्ञा के देश में ले जा रहा था, फिर भी मार्ग में वे मिस्र के लिए लालायित थे! वे अब भी अतीत की ओर देख रहे थे। भविष्य में उनके लिए जो बड़ी आशीषें रूकी हुईं थीं, उनकी ओर आगे देखने के बजाए वे उन बातों को पाना चाहते थे जो उन्होंने पायी थी। यात्रा की चुनौती की वजह से उन्होंने महसूस किया कि उनका भूतकाल उनके भविष्यकाल से बेहतर है। परंतु वे गलत थे। और इस कारण, उनमें से कई लोग जंगल में मर गए, उन्हें मिस्र से छुड़ाने के द्वारा परमेश्वर उन्हें जो देना चाहता था, उसकी भरपूरी में वे प्रवेश नहीं कर पाए।

परमेश्वर के छुटकारे के कार्य में अनुशासन और कुछ मामले में, आवश्यकता पड़ने पर दण्ड शामिल है

हमारे जीवन में परमेश्वर के छुटकारे के कार्य के भाग के रूप में, उसे हमारे जीवनों में गलत बातों में सुधार लाने की ज़रूरत है। यदि हम जल्द ही गलत भावनाओं, गलत आचरणों, गलत इरादों, कल्पनाओं को समझ जाएंगे और खुद में स्वेच्छा से सुधार लाएंगे, तो बहुत अच्छा होगा। परंतु हम में से अधिकतर लोग इतने आज्ञाकारी नहीं होते। जिन बातों को हम पकड़े रहना चाहते हैं, उन्हें त्यागने से हम विरोध करते हैं। कभी-कभी हम इनमें से कुछ बातों को गलत नहीं समझते। और इसलिए, परमेश्वर को हमारे जीवनों में सुधार लाने की ज़रूरत पड़ती है, और वह हमारे जीवनों में अपने छुटकारे के कार्य को प्रगट करता है।

उदाहरण के लिए, पति पत्नी का यह विश्वास करना कि परमेश्वर उनके जीवन में छुटकारा लाएगा और उनके रिश्तों को पुनःस्थापित करेगा। दोनों को गलत स्वभाव और आचरण में सुधार लाने की ज़रूरत होगी। कभी-कभी यह उनकी गिरावट का एक भाग हो सकता है, और शायद उन्हें इस बात का अहसास भी नहीं होगा कि उनके कुछ आचरण या स्वभाव के कारण उनका वैवाहिक जीवन बर्बाद हो गया है, शायद वे सोचते थे कि उनके इस प्रकार के स्वभाव या आचरण में कुछ भी गलत नहीं है। जब वे इसमें से मार्ग निकालने के लिए कार्य करते हैं, तब उन्हें विनम्र बनना है ताकि उनमें सुधार और बदलाव आ सके।

परमेश्वर जिनसे प्रेम करता है उन्हें ताड़ना देता है। उसकी ताड़ना प्रेमपूर्ण सुधार है, जो हमारी भलाई के लिए है, हमारे विनाश के लिए नहीं। यह परमेश्वर के छुड़ाने वाले हृदय से आता है, जो हमारी मूर्खता से हमें छुटकारा देने की कोशिश करता है।

इब्रानियों 12:5-11

[5] और तुम उस उपदेश को जो तुमको पुत्रों के समान दिया जाता है, भूल गए हो, कि हे मेरे पुत्र, प्रभु की ताड़ना को हलकी बात न जान, और जब वह तुझे घुड़के तो हियाव न छोड़।

[6] क्योंकि प्रभु, जिससे प्रेम करता है, उसकी ताड़ना भी करता है; और जिसे पुत्र बना लेता है, उसको कोड़े भी लगाता है।
[7] तुम दुख को ताड़ना समझकर सह लो। परमेश्वर तुम्हें पुत्र जानकर तुम्हारे साथ बर्ताव करता है। वह कौन सा पुत्र है, जिसकी ताड़ना पिता नहीं करता?
[8] यदि वह ताड़ना जिसके भागी सब होते हैं, तुम्हारी नहीं हुई, तो तुम पुत्र नहीं, पर व्यभिचार की सन्तान ठहरे!
[9] फिर जबकि हमारे शारीरिक पिता भी हमारी ताड़ना किया करते थे, तो क्या हम आत्माओं के पिता के और भी आधीन न रहें, जिससे जीवित रहें।
[10] वे तो अपनी अपनी समझ के अनुसार थोड़े दिनों के लिए ताड़ना करते थे, परंतु यह तो हमारे लाभ के लिए करता है, कि हम भी उसकी पवित्रता के भागी हो जाएं।
[11] और वर्तमान में हर प्रकार की ताड़ना आनन्द की नहीं, परंतु शोक ही की बात दिखाई पड़ती है, तौभी जो उसको सहते सहते पक्के हो गए हैं, पीछे उन्हें चैन के साथ धर्म का प्रतिफल मिलता है।

वह उसके वचन के द्वारा, उसके आत्मा के कार्य के द्वारा, हमारे आसपास के लोगों के द्वारा, और कभी-कभी उन परिस्थितियों के द्वारा जिन्हें वह हमारी भलाई के लिए उत्पन्न करता है, हमें सुधारता है। जो सुधारना या ताड़ना वह हमारे जीवन में लाता है, उसे हमें ग्रहण करने के लिए तैयार रहना है।

कभी-कभी ऐसा समय होता है जब हमारे जीवनों में उसके छुटकारे के कार्य के एक भाग के रूप में हम न्याय या दण्ड का सामना करते हैं। हमारा पाप प्रगट होता है और हम कुछ समय तक हमारे गलत कामों के परिणामों का सामना करते हैं। परंतु इसमें भी, परमेश्वर हमारे पूर्ण विनाश के लिए नहीं, परंतु हमारे पुनर्स्थापन और छुटकारे के लिए प्रयास करता है। राजा दाऊद इस बात को समझ गया था जब वह उस परिस्थिति में से गुज़र रहा था, जब परमेश्वर ने उसके हत्या और व्यभिचार के पाप को सब लोगों के सामने उजागर कर दिया। परमेश्वर ने उसे पुनर्स्थापित किया और उसने अपने जीवन पर परमेश्वर की करूणा और भलाई के हाथ को देखा।

हमारे जीवन में उसका ताड़ना का व्यवहार भी दया के साथ अभिव्यक्त होता हैः

यशायाह 54:8
क्रोध केआवेग में आकर मैंने पल भर केलिये तुझसे मुँह छिपाया था, परन्तु अब अनन्त करुणा से मैं तुझ पर दया करूँगा, तेरे छुड़ाने वाले यहोवा का यही वचन है।

परमेश्वर के छुटकारे का कार्य न केवल हमें अपनी पूर्व स्थिति में लौटाता है, परंतु हमें पहले से अधिक बेहतर क्षेत्र में ऊंचा उठाता है

हमारे जीवन में कार्य करते समय परमेश्वर हमें गौरव से और बड़े गौरव, विश्वास से और बड़े विश्वास और बल से, और बड़े बल की ओर ले जाता है। शुरूवात से समाप्ति भली है, और आरम्भ से अंत भला है, जब परमेश्वर वह करता है। उसी तरह, हमें छुड़ाते समय, परमेश्वर हमें न केवल वह लौटाता है जो था, परंतु उससे भी आगे बढ़कर, हमारे आरम्भ से अधिक बेहतर बातों की ओर हमें ले जाता है।

यूसुफ

यूसुफ के विषय में विचार करें। करीब 13 वर्षों के क्लेश के बाद परमेश्वर उसे जिस स्थान पर ले आया वह इतना अद्‌भुत था कि यूसुफ ने उसे अपने बेटों को नाम देते समय व्यक्त कियाः

उत्पत्ति 41:51,52
51 और यूसुफ ने अपने जेठे का नाम यह कहकर एनश्शे रखा, कि परमेश्वर ने मुझ से मेरा सारा क्लेश, और मेरे पिता का सारा घराना भुला दिया है।
52 और दूसरे का नाम उसने यह कहकर एप्रैम रखा, कि मुझे दुःख भोगने के देश में परमेश्वर ने फुलाया फलाया है।

अपने पिता के घर में सबसे प्रिय बेटे के रूप में होने से लेकर, वह फिरौन के दरबार में भी और पूरे मिस्र देश में सबसे प्रिय और अनुग्रहीत व्यक्ति बन गया। विशेष रंगबिरंगी पोशाक पहनने से लेकर, अब वह महीन मलमल के वस्त्र पहनने लगा और सोने की चेन से, मिस्र की उत्तम वस्तुओं से विभूषित हुआ। उसके अपने ही भाइयों ने उसे तुच्छ जाना था और उससे विश्वासघात से बेच दिया था, परंतु अब सम्पूर्ण मिस्र के द्वारा उसे आदर और सम्मान प्राप्त हुआ। परमेश्वर ने उसे उसकी सारी विपत्तियों में से

छुड़ाया और उसे ऐसे स्थान में ले आया जहां अपने जीवन के अगले हिस्से में वह अपने आरम्भ की तुलना में अति उत्तम दशा में था। यह छुटकारा है।

अय्यूब

परमेश्वर ने अय्यूब के लिए क्या किया सोचें। उसका परीक्षा का थोड़ा समय (बाइबल में यह स्पष्ट नहीं है कि अय्यूब ने कब तक क्लेश सहा, परंतु कम से कम कुछ महीनों का समय होगा और कुछ यहूदी परम्पराओं के अनुसार एक साल का समय हो सकता है) 140 वर्षों की दुगुनी आशीष की तुलना में जिसका उसने अनुभव किया, कुछ भी नहीं था।

अय्यूब 42:10

जब अय्यूब ने अपने मित्रों के लिए प्रार्थना की, तब यहोवा ने उसका सारा दुःख दूर किया। और जितना पहले अय्यूब का था, उसका दुगना यहोवा ने उसे दे दिया।

अय्यूब 42:12,16,17

12 और यहोवा ने अय्यूब के बाद के दिनों में उसके पहले के दिनों से अधिक आशीष दी; और उसके चौदह हज़ार भेड़ बकरियां, छः हज़ार ऊंट, हज़ार बैल, और हज़ार गधियाँ हो गई।

16 इसके बाद अय्यूब एक सौ चालीस वर्ष जीवित रहा, और चार पीढ़ी तक अपना वंश देखने पाया

17 निदान अय्यूब वृद्धावस्था में दीर्घायु होकर मर गया।

इस्राएली लोग

परमेश्वर ने अपने लोग इस्राएलियों को मिस्र की गुलामी से निकाला, जिसे वे "लोहा पिघलाने की भट्टी" कहते थे और उसने उन्हें "अपनी मिरास के लोग" बनाया। जो एक समय गुलाम थे, अब उसके अपने विशेष लोग थे। वह उन्हें उस देश से निकाल ले आया, जहां वे गुलामों के रूप में परिश्रम कर रहे थे और उन्हें ऐसे देश में ले आया जहां दूध और मधु की धाराएं बहती थी। वे आत्मिक रीति से और स्वाभाविक रूप से जिस स्थान में लाए गए, वह उन सारी बातों से बढ़कर था जिसे उन्होंने पहले कभी जाना न था।

व्यवस्थाविवरण 4:20
और तुमको यहोवा लोहे के भट्ठे के सरीखे मिस्त्र देश से निकाल ले आया है, इसलिये कि तुम उसकी प्रजारूपी निज भाग ठहरो, जैसा आज प्रगट है।

व्यवस्थाविवरण 6:21-23
[21] तब अपने लड़के से कहना, कि जब हम मिस्त्र में फिरौन के दास थे, तब यहोवा बलवन्त हाथ से हमको मिस्त्र में से निकाल ले आया;
[22] और यहोवा ने हमारे देखते मिस्त्र में फिरौन और उसके सारे घराने को दुःख देनेवाले बड़े बड़े चिन्ह और चमत्कार दिखाए;
[23] और हमको वह वहां से निकाल लाया, इसलिये कि हमें इस देश में पहुंचाकर, जिसके विषय में उसने हमारे पूर्वजों से शपथ खाई थी, इसको हमें सौंप दे।

उड़ाऊ पुत्र

उड़ाऊ पुत्र जब घर लौट आया, तब उसके पिता ने उसके लिए जो कुछ किया वह उसने पहले कभी अपने किसी भी बेटों के लिए नहीं किया था। घर लौट आने वाले उड़ाऊ पुत्र को उत्तम पोशाक, अंगूठी दी गई और उसके लिए बड़े उत्सव का आयोजन किया गया, इस क्षण से पहले उस घर में ऐसा कभी नहीं हुआ था। लूका 15:29 में बड़े बेटे की प्रतिक्रिया से हम इस बात का अनुमान लगा सकते हैं।

छुटकारे की बड़ी योजना

भले ही हम अधर्म पापी थे, फिर भी अपने पुत्र यीशु मसीह के द्वारा, उसने हमें न केवल पाप और शैतान के बंधन से छुड़ाया गया है, बल्कि वह हमें परमेश्वर के परिवार में ले आया और हमें परमेश्वर के वारिस और मसीह के संगी वारिस बनाया गया है। हम मसीह के साथ पिता के दाहिने हाथ पर बैठाए गए हैं। इस बात का कोई संकेत नहीं है कि प्रथम पुरुष आदम ने आत्मिक क्षेत्र में ऐसे पद का कभी अनुभव किया हो।

परमेश्वर के छुटकारे का कार्य न केवल हमारी पूर्वस्थिति में हमें स्थापित करता है, बल्कि हमें ऐसे स्थान पर ऊंचा उठाता है जो आरम्भ से कहीं अधिक ऊंचा है।

आप क्या चाहते हैं कि परमेश्वर आपके जीवन में छुड़ाए?

परमेश्वर आपका छुड़ाने वाला है। उसकी छुड़ाने की योग्यता से परे कुछ भी नहीं है। शायद आपके जीवन में ऐसा कुछ है या कई बातें हैं जिन्हें परमेश्वर को छुड़ाने की ज़रूरत है। शायद आपने ऐसे स्वप्न से आरम्भ किया, जो आप जानते थे कि परमेश्वर द्वारा प्रेरित है। परंतु उस क्षण, जीवन की परिस्थितियां आपके उस स्वप्न से इतनी दूर और भिन्न थी कि आपने सोचा कि कभी परिस्थितियां कभी वापस लौट पाएगी। क्या आप विश्वास से उसकी ओर देखेंगे, चाहे आपकी परिस्थिति कैसी क्यों न हो?

आपके जीवन में परमेश्वर अपने छुटकारे के कार्य को किस प्रकार करे इस विषय में उसे हुकुम देने की कोशिश न करें। आपकी परिस्थिति में छुटकारा देने हेतु परमेश्वर जो कुछ करता है और यह वह किस प्रकार करता है इसमें और जो कुछ उसने किसी और के लिए किया, उसमें अंतर हो सकता है। आपके जीवन की परिस्थिति में छुटकारे को देखने के लिए उसके साथ चलना सीखें। जिस बड़ी महिमा में वह आपको लाएगा, उसे वही तय करेगा। वह आपके लिए क्या करेगा इस विषय में आप जो सोचते हैं, वैसा शायद ऐसा न हो; शायद वह पूर्ण रूप से भिन्न हो। उसने किसी और के लिए जो कुछ किया उसकी शायद यह नकल न हो। उसके पास आपके लिए कुछ अनोखा और विशेष हो सकता है, जो वह चाहता है कि आपकी विशिष्ट जीवन परिस्थिति में उसके छुटकारे के कार्य के परिणामस्वरूप हो। वही है जो राख के बदले सुंदरता देता है और वह निश्चित रूप से जानता है कि कौन सी बात आपके जीवन को खूबसूरत बनाएगी ताकि केवल उसकी महिमा प्रकाशित हो।

परमेश्वर के छुटकारे के कार्य की प्रेरणा हमें उस अखंड, अटल प्रेम से प्राप्त होती है जिसकी कोई सीमाएं नहीं हैं। आपके प्रति उसके प्रेम पर यकीन रखें।

परमेश्वर का छुटकारे का कार्य अलौकिक है, परंतु उसमें हमारा उसके साथ परिश्रम करना शामिल है। आपके जीवन में उसके छुटकारे और पुनःस्थापन को देखने के लिए उसके साथ मिलकर परिश्रम करें।

परमेश्वर के छुटकारे के कार्य में अनुशासन और कुछ मामलों में आवश्यकता पड़ने पर दण्ड भी हो सकता है। यदि आपके जीवन में किसी बात में सुधार लाने की ज़रूरत है, तो सुधार लाएं। परमेश्वर के सुधार के अधीन हों। उसका विरोध न करें।

परमेश्वर का छुटकारे का कार्य हमें न केवल पूर्वस्थिति में पुनःस्थापित करता है, बल्कि आरम्भ से भी अधिक उत्तम स्थान में ऊंचा उठाता है। बड़ी महिमा की उम्मीद रखें!

व्यक्तिगत लागूकरण

1) आपके जीवन के एक या उससे अधिक क्षेत्रों के लिए प्रभु से प्रार्थना करें जिसमें आप चाहते हैं कि परमेश्वर आपको छुटकारा प्रदान करे। परमेश्वर में अपना विश्वास व्यक्त करें और उसके सामने समर्पण करें कि वस्तुओं की फिर प्राप्ति और पुनःस्थापन के लिए आप उसके साथ चलेंगे।

2) किसी और के लिए प्रार्थना करें जिसे उसके जीवन में परमेश्वर के छुटकारे के कार्य की ज़रूरत है। उनके लिए विश्वास से प्रार्थना करें।

3
परमेश्वर के छुटकारे की प्रक्रिया में मुख्य तत्व

परमेश्वर हमें न्योता देता है कि हम उसके समान बनें, हमारा स्वभाव छुड़ाने वाला हो। जब हम अपने खुद के जीवन परिस्थितियों को देखते हैं या जब हम अपने आसपास लोगों के साथ काम करते हैं, तब हमें छुड़ाने वाला हृदय रखना चाहिए। हमें छुड़ाने का, फिर पाने का, संजीवित करने का, नया बनाने का या पुनर्स्थापित करने का प्रयास करना है। इस अध्याय में, हम इस प्रक्रिया को समझने का प्रयास करते हैं जिसके द्वारा परमेश्वर हमारे जीवनों में उसके छुड़ाने वाले कार्य को प्रगट करता है।

परमेश्वर की छुड़ाने वाली प्रक्रिया में **समय, बलिदान, क्षमा** और **पुनर्स्थापन** के तत्व शामिल हैं। हम यहां पर परमेश्वर की इस छुड़ाने वाली प्रक्रिया में उसके सहकर्मी बनने के लिए हैं। हमें परमेश्वर के साथ काम करना है, और प्रत्येक तत्व को पहचानना है और उसका अनुसरण करना है, जैसा वह हमारे जीवनों में वस्तुओं को छुड़ाने हेतु कार्य करता है, उसी तरह जब हम दूसरों के जीवनों में उसके छुड़ाने वाले कार्य को होते हुए देखने के लिए उसके साथ परिश्रम करते हैं।

समय

जब समय पूरा होता है, तब परमेश्वर अपना छुटकारे का कार्य पूरा करता है।

परमेश्वर हमेशा काम में व्यस्त था और है। परंतु हम उसके छुटकारे के कार्य की विशिष्ट बातों को समय पूरा होने पर होते हुए देखते हैं जिसे बाइबल *'कैरोस'* समय कहती है। *'कैरोस'* ग्रीक शब्द है जो निश्चित, उचित या सही समय या ऋतु के लिए प्रयुक्त किया जाता है। यह वह समय है जब वस्तुएं परिपक्व अवस्था में आती हैं (उन बातों का समय पूरा हो जाता है)।

परमेश्वर की महान योजना

गलातियो 4:4,5

[4] परन्तु जब समय (यूनानी *कैरोस*) **पूरा हुआ, तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा, जो स्त्री से जन्मा, और व्यवस्था के आधीन उत्पन्न हुआ।**

[5] ताकि व्यवस्था के आधीनों को मोल लेकर छुड़ा ले, और हम को लेपालक होने का पद मिले।

परमेश्वर के उद्धार की महान योजना में, यद्यपि परमेश्वर ने अपने छुटकारे के प्रयोजन को पूरा करने हेतु अपने पुत्र को संसार में भेजने से पहले अदन की वाटिका में स्त्री की संतान के आगमन की घोषणा की, जिस बात को 4000 वर्ष बीत चुके। इन 4000 वर्षों के दौरान परमेश्वर कार्य कर रहा था, परमेश्वर लोगों को, सही स्थान को और समय को तैयार कर रहा था। प्रभु यीशु ने खुद को छुटकारे के दाम के रूप में दे दिया और उचित समय में इसकी गवाही दी गई (घोषणा की गई, जाहीर किया गया) (1 तीमुथियुस 2:5,6)।

सनातन उद्देश्य

इफिसियों 1:9,10

[9] कि उसने अपनी इच्छा का भेद उस सुमति के अनुसार हमें बताया जिसे उसने अपने आप में ठान लिया था,

[10] कि समयों (यूनानी *कैरोस*) **के पूरे होने का ऐसा प्रबन्ध हो कि जो कुछ स्वर्ग में है, और जो कुछ पृथ्वी पर है, सब कुछ वह मसीह में एकत्र करे।**

समय की पूर्णता में परमेश्वर के सनातन उद्देश्य का प्रगट होना भी होगा।

हमारे दृष्टिकोण से, इन सब बातों के लिए काफी समय लगता हुआ प्रतीत होता है। परंतु परमेश्वर पूर्ण रूप से जानता है कि वह क्या कर रहा है और वह उन बातों को कब पूरा करेगा।

हम देखते हैं कि लोगों के व्यक्तिगत् जीवनों में, या समूहों में लोगों के मध्य, परमेश्वर के छुटकारे के कार्य में, परमेश्वर सही समय में काम करता है। अय्यूब के जीवन में (याकूब 5:7-11), यूसुफ के जीवन में (भजन

संहिता 105:19), परमेश्वर समय और ऋतुओं के अनुसार काम कर रहा था (सभोपदेशक 3:11)।

जैसा कि हमने पिछले अध्याय में बताया है, जब परमेश्वर हमारे व्यक्तिगत् जीवनों में उसके कार्य को प्रगट करता है, तब हमें धीरज रखने की ज़रूरत पड़ती है। जब परमेश्वर पुनःस्थापन लाता है, जो मिट गया है उसका परमेश्वर पुनर्निर्माण करता है, जो कुछ खो गया है, उसे फिर लौटाने हेतु वह हमारी जब सहायता करता है, तब हमें उस समय के दौरान उसके साथ चलने की ज़रूरत है।

परमेश्वर के छुटकारे के कार्य में जब वह उद्धार की ओर लोगों की अगुवाई करता है, उस विषय में हम देखते हैं कि परमेश्वर पवित्र शास्त्र में *"कृपा-दृष्टि के दिन"* (1 पतरस 2:12) के विषय में बताता है (1 पतरस 2:12)। उसी तरह थुआतीरा की कलीसिया की एक स्त्री से, प्रभु ने कहा, *"मैंने उसको मन फिराने के लिए अवसर दिया, परंतु वह अपने व्यभिचार से मन फिराना नहीं चाहती"* (प्रकाशितवाक्य 2:21)। उसी तरह प्रभु यीशु एक नगर (यरूशलेम नगर) के लिए रोया, क्योंकि उन्होंने उस *"अवसर को जब उन पर कृपा-दृष्टि"* (लूका 19:41-44) की गई नहीं पहचाना।

लोगों को अपनी ओर लाने का कार्य करते समय, परमेश्वर उन्हें समय देता है। वह सही समय में उनसे भेंट करता है और भिन्न भिन्न तरह से उन्हें अपने निकट लाता है।

सहकर्मियों के रूप में हमारा लक्ष्य परमेश्वर जो कुछ कर रहा है उसे पहचानना है और उसके साथ आगे बढ़ना है। हमें अधीर होने की परीक्षा का इन्कार करना है और परमेश्वर जब कुछ करता है, तब उसे पहचानने का प्रयास करना है।

परमेश्वर के साथ परिश्रम करते समय, हम इस बात का अंगीकार करते हैं कि भले ही ऐसा लगता हो कि कुछ नहीं हो रहा है, फिर भी परमेश्वर कार्य कर रहा है।

उदाहरण के तौर पर, यदि आप परिवार के सदस्य को प्रभु के निकट आते हुए देखने के लिए और उनके जीवनों में परमेश्वर के छुटकारे के कार्य को होते हुए देखने के लिए, परमेश्वर के साथ काम कर रहे हैं; तो इस प्रक्रिया में समय के उपादान को समझें। यद्यपि प्रत्येक के लिए आज का दिन उद्धार का दिन और स्वीकारणीय समय है (2 कुरिन्थियों 6:2), फिर भी प्रत्येक व्यक्ति विभिन्न समयों में उद्धार के परमेश्वर द्वारा दिए जाने वाले प्रयोजन को स्वीकार करेगा। परमेश्वर के साथ और जिस व्यक्ति के साथ आप काम कर रहे हैं उन्हें समय दें ताकि छुटकारे की प्रक्रिया पूरी हो सके। आप जानते हैं कि प्रत्येक दिन उस क्षण की ओर आपको निकट ला रहा है जब व्यक्तिगत् रूप से उनकी मसीह के साथ भेंट होगी और परमेश्वर उनके जीवनों में एक महान काम करेगा। परंतु, तब तक अब आपको क्या करना चाहिएः

- अवसर आते ही विश्वास से परमेश्वर के बीज बोएं। बीज अंकुरित हो रहे हैं यह देखने के लिए उन्हें खोदते न रहें। अन्यथा जो बीज आप बो रहे हैं, उन्हें आप बर्बाद कर देंगे। उसके वचन की सामर्थ पर भरोसा रखें कि वे फल जाएंगे।
- प्रार्थना में बीज की सिंचाई करें और उस व्यक्ति के जीवन के लिए विश्वास की घोषणा करें।
- उस व्यक्ति के प्रति परमेश्वर के प्रेम, क्षमा, और करूणा को प्रगट करें। वे आप में और आपके द्वारा परमेश्वर के प्रेम को देखने पाएं।
- उनके जीवनों में छुटकारा और पुनर्स्थापन का अंगीकार करें। उनके जीवनों के लिए परमेश्वर के भविष्यात्मक भविष्य को बोलें।

याद रखें कि जब हम अन्य लोगों के जीवनों में परमेश्वर के छुटकारे के कार्य के लिए उसके साथ परिश्रम करते हैं, तब वह व्यक्तिगत् तौर पर हमारे जीवनों में कार्य करता है। इस प्रक्रिया के द्वारा हम परमेश्वर के विषय में बहुत कुछ सीखते हैं। जब हम किसी और के जीवन में उसके छुटकारे के कार्य को पाने की कोशिश करते हैं, तब हम खुद को बदलते हुए देखते हैं।

जब हम अपने व्यक्तिगत् जीवन की परिस्थितियों में परमेश्वर के छुटकारे के कार्य की खोज करते हैं, तब हम इन्हीं सच्चाइयों को अपने जीवनों में भी लागू करते हैं।

बलिदान

परमेश्वर के छुटकारे की प्रक्रिया में दूसरा मुख्य उपादान है बलिदान।

परमेश्वर की छुटकारे की महान योजना में बलिदान

छुटकारा इसलिए सम्भव हुआ क्योंकि छुटकारे का दाम (मुक्ति का दाम, बलिदान) दिया गया।

प्रभु यीशु ने सबके लिए खुद को छुटकारे के दाम के रूप में दे दिया।

1 तीमुथियुस 2:5,6
[5] क्योंकि परमेश्वर एक ही है; और परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में भी एक ही बिचवई है, अर्थात् मसीह यीशु जो मनुष्य है,
[6] जिसने अपने आपको सब के छुटकारे के दाम में दे दिया; ताकि उसकी गवाही ठीक समयों पर दी जाए।

गलत काम के लिए प्रायश्चित के रूप में या कर्ज रद्द करने के लिए बलिदान दिया जाता है। उसके बाद प्रायश्चित छुटकारे को सम्भव बनाता है।

छुटकारे के लिए बलिदान के विषय में पुराने नियम की समझ आवश्यक है

बलिदान छुड़ाने वाले कुटुम्बी में देखा जाता है। यदि व्यक्ति कर्ज में होता तो छुड़ाने वाला कुटुम्बी उसके छुटकारे का दाम देता था।

पुराने नियम में, सभी तरह के विधियुक्त बलिदानों (उदाहरण के तौर, होमबलि) को "प्रायश्चित" *(कंपार)* के रूप में समझाया जाता था। प्रायश्चित के वार्षिक दिन *(यॉम किप्पुर)* का वर्णन लैव्यव्यवस्था की पुस्तक के 16वें अध्याय में विस्तृत रूप से किया गया है, जो कि मसीह के छुटकारे के कार्य की ओर संकेत करता था।

मध्यस्थता, आराधना जैसे आत्मिक बलिदान भी छुटकारे के दाम के रूप में, छुटकारे की कीमत के रूप में उपयोगी हैं, जैसा कि हम पुराने नियम में देखते हैं।

छुटकारे की कीमत के रूप में छुटकारे के दाम की ज़रूरत थी यह समझ बाइबल की अत्याधिक पुरानी पुस्तक, अय्यूब की पुस्तक में भी देखी जाती है।

अय्यूब 33:23,24

[23] यदि उसके लिए कोई बिचवई स्वर्गदूत मिले, जो हज़ार में से एक ही हो, जो भावी कहे। और जो मनुष्य को बताए कि उसके लिए क्या ठीक है।
[24] तो वह उस पर अनुग्रह करके कहता है, कि उसे गढहे में जाने से बचा ले, मुझे छुड़ौती मिली है।

जब अय्यूब तकलीफ से गुज़र रहा था, तब उसने मध्यस्थता की लालसा की, ऐसा कोई जो उसकी ओर से परमेश्वर के सामने खड़े रहकर मध्यस्थता करे, और उसमें उसे बाहर निकाले।

अय्यूब 9:32,33

[32] क्योंकि वह मेरे तुल्य मनुष्य नहीं है कि मैं उस से वादविवाद कर सकूं, और हम दोनों एक दूसरे से मुकदमा लड़ सकें।
[33] हम दोनों के बीच कोई बिचवई नहीं है, जो हम दोनों पर अपना हाथ रखे।

अय्यूब 16:21

कि कोई परमेश्वर के विरूद्ध सज्जन का, और आदमी का मुकदमा उसके पड़ोसी के विरूद्ध लड़े।

यद्यपि कभी-कभी परमेश्वर के लोग स्वयं परमेश्वर के विरोध में विद्रोह करते थे, फिर भी मूसा ने उनके लिए मध्यस्थता की और परमेश्वर को उन्हें उस छुटकारे के मार्ग से ले जाते हुए देखा।

भजन संहिता 106:23

इसलिये उसने कहा, कि मैं इन्हें सत्यानाश कर डालता यदि मेरा चुना हुआ मूसा जोखिम के स्थान में उनके लिये खड़ा न होता ताकि मेरी जलजलाहट को ठण्डा करे कहीं ऐसा न हो कि मैं उन्हें नाश कर डालूं।

मसीह के प्रावधान को दूसरों तक पहुंचाना

प्रभु यीशु ने पहले ही सारी मानवजाति के लिए उद्धार (छुटकारा) प्रदान किया है। फिर भी, परमेश्वर ने अपने लोगों को उसके छुटकारे को व्यक्तिगत् रूप में अनुभव करने हेतु जो कुछ प्रदान किया है, उसे उन्हें उसे सौंपने वाले हम अभिकर्ता हैं। उसकी छुटकारे के प्रक्रिया में उसके सहकर्मियों के रूप में, हमें बलिदान करने हेतु तैयार रहना है। यह बलिदान प्रार्थना, मध्यस्थता, आर्थिक रूप से देने, मुश्किल स्थानों में जाने, आराम को त्यागने, के रूप में हो सकता है, या अन्य रूप में जिसकी कीमत हमें चुकानी पड़ती है।

हम यहां पर मध्यस्थता की भूमिका पर ज़ोर देना चाहेंगे। मध्यस्थता के मसीह के प्रयोजन को दूसरों तक पहुंचाने की इस प्रक्रिया का एक भाग है उद्धार न पाए हुओं के पक्ष में मध्यस्थता करना। क्रूस पर मसीह के बलिदान को मध्यस्थता का कार्य भी कहा जाता है (यशायाह 53:12)।

मध्यस्थता जैसे आत्मिक बलिदान परमेश्वर के छुटकारे की प्रक्रिया में मुख्य तत्व हैं। वह इसलिए छुड़ाता है क्योंकि वह छुटकारे का दाम, बलिदान और मध्यस्थता को देखता है। इसलिए, किसी और के लिए मध्यस्थता करना उनके जीवनों में परमेश्वर के छुटकारे के कार्य की कुंजी है।

इसका अर्थ यह नहीं है कि हम उनके छुटकारे का दाम चुका रहे हैं। केवल एक ही परिपूर्ण बलिदान है, जो मसीह ने पहले ही दे दिया है। इसके बदले में, हम परमेश्वर की छुटकारे की प्रक्रिया में उसके सहकर्मियों के रूप में अपनी भूमिका निभा रहे हैं, बलिदान कर रहे हैं, ताकि जो कुछ लोगों के लिए दिया गया है, उसे वे अनुभव कर सकें और पा सकें (देखें कि पौलुस ने कुलुस्सियों 1:24,25 में क्या कहा है)। उन्होंने उद्धार पाया है, हमारे बलिदान के कारण नहीं, परंतु केवल इसलिए कि यीशु ने उनके लिए कुछ किया। हम मसीह के छुटकारे के कार्य में मात्र उसके सहकर्मी हैं, जिसके द्वारा हम उन दुखी लोगों की ओर सहायता का हाथ आगे बढ़ाते हैं जिन्हें वह छुड़ाने का प्रयास करता है।

प्रार्थना, आराधना, मध्यस्थता आदि का आत्मिक बलिदान चढ़ाना आपके जीवन में परमेश्वर के छुटकारे के कार्य को स्वीकार करने हेतु आपको तैयार करता है। आपकी ओर से दूसरों को आत्मिक बलिदान चढ़ाने हेतु तैयार करना भी सामर्थपूर्ण है।

उसी तरह, जब हम परमेश्वर के साथ परिश्रम करते हुए हमारे आसपास के लोगों के जीवन में उसके छुटकारे के कार्य को लाते हैं, तब हम उनकी ओर से आत्मिक बलिदान चढ़ाते हैं। हम जाकर उनकी सेवा करने, उनकी सहायता करने और उन्हें सुसमाचार सुनाने हेतु बलिदान करते हैं।

क्षमा

परमेश्वर की छुटकारे की प्रक्रिया में अगला मुख्य उपादान है, क्षमा।

इफिसियों 1:7
हमको उसमें उसके लहू के द्वारा छुटकारा, अर्थात् अपराधों की क्षमा, उसके उस अनुग्रह के धन के अनुसार मिला है।

परमेश्वर अपने पुत्र यीशु मसीह के द्वारा जो हमें क्षमा प्रदान करता है, उसे हमें व्यक्तिगत् रूप से ग्रहण करना है। हमारी सबसे बड़ी समस्याओं में से एक यह है कि यद्यपि हम बौद्धिक रूप से यह समझते हैं कि परमेश्वर हमें क्षमा करता है, फिर भी हम खुद को क्षमा प्राप्त लोगों के रूप में नहीं देख पाते या कभी-कभी हमने जो गलती की है, उसके लिए खुद को क्षमा नहीं कर पाते। यह सच है कि हमने बहुत बुरा किया होगा, जिसकी वजह से हम आज उस जगह पर आ पहुंचे हैं जहां पर हम हैं। फिर भी, उसके पुत्र यीशु मसीह पर विश्वास के कारण और उसके छुटकारे के लहू की सामर्थ में, हम क्षमा पाए हुए हैं। अतः हम सब प्रकार के अपराधबोध, लज्जा और दण्ड से मुक्त होकर चल सकते हैं।

कभी-कभी हम खुद को जिन समस्याओं में पाते हैं, उसका कारण अन्य लोगों द्वारा हमारे विरोध में की गई बुराई होती है। जिस प्रकार हमें क्षमा की गई है, उसी प्रकार हमें उन लोगों को क्षमा करना है जिन्होंने हमारे साथ गलत किया है। उनके विरोध में किसी प्रकार की कटु भावना रखने का

हमें कोई अधिकार नहीं। क्षमा प्रदान करने में अत्यंत सामर्थपूर्ण ऐसा कुछ है। स्तिफनुस ने शाऊल को क्षमा की, जो उसके पथराव को देख रहा था। अगली बार हम शाऊल को यीशु से भेंट करते हुए देखते हैं!

उसी तरह, जब हम लोगों के जीवनों में परमेश्वर के छुटकारे के कार्य को देखने हेतु परिश्रम करते हैं, तब हमें लोगों के जीवनों में परमेश्वर की क्षमा का आश्वासन लाना है। हमें उन्हें बताना है कि वे मसीह में शुद्ध किए गए हैं, धर्मी ठहराए गए हैं, और पवित्र किए गए हैं (1 कुरिन्थियों 6:11) और परमेश्वर उनके विरोध में किसी भी तरह का विरोधी भाव नहीं रखता।

परमेश्वर की छुटकारे की प्रक्रिया में लोगों को ऐसे समाज में ग्रहण करना समाहित है जो लोगों को छुड़ाये गए केरूप मे देखता है, और उनके साथ वैसे ही व्यवहार करता है। कुरिन्थुस की कलीसिया में जिस व्यक्ति ने अनैतिकता का पाप किया था, उसके पश्चाताप करने पर, उसे क्षमा प्राप्त व्यक्ति के रूप में ग्रहण करना था।

2 कुरिन्थियों 2:6-11

[6] ऐसे जन के लिए यह दण्ड जो भाइयों में से बहुतों ने दिया, बहुत है।
[7] इसलिए इससे यह भला है कि उसका अपराध क्षमा करो; और शान्ति दो, न हो कि ऐसा मनुष्य बहुत उदासी में डूब जाए।
[8] इस कारण मैं तुमसे बिनती करता हूं कि उसको अपने प्रेम का प्रमाण दो।
[9] क्योंकि मैंने इसलिए भी लिखा था कि तुम्हें परख लूं, कि तुम सब बातों के मानने के लिए तैयार हो, या नहीं।
[10] जिसका तुम कुछ क्षमा करते हो, उसे मैं भी क्षमा करता हूं, क्योंकि मैंने भी जो कुछ क्षमा किया है, यदि किया हो, तो तुम्हारे कारण मसीह की जगह में होकर क्षमा किया है,
[11] कि शैतान का हम पर दांव न चले, क्योंकि हम उसकी युक्तियों से अनजान नहीं।

फिलेमोन की पुस्तक ओनेसिमस नाम के एक भागे हुए गुलाम की सुंदर कहानी है। उसने कुलुस्सै में अपने स्वामी फिलेमोन से कुछ चुराया था। फिलेमोन एक विश्वासी था और पौलुस का सहकर्मी। ओनेसिमस भाग जाता है और रोम की कैद में उसकी भेंट पौलुस से होती है! वहां पर पौलुस उसे प्रभु के निकट लाता है और फिर उसे इस पत्र के साथ फिलेमोन के

पास वापस भेज देता है। यह एक सुंदर कहानी है जहां पौलुस फिलेमोन से अनुरोध करता है कि वह ओनेसिमस को क्षमा करे और उसे ग्रहण करेः

फिलेमोन 1:12,16,17
[12] उसी को अर्थात् जो मेरे हृदय का टुकड़ा है, मैंने उसे तेरे पास लौटा दिया है।
[16] परन्तु अब से दास के समान नहीं, वरन् दास से भी उत्तम, अर्थात् भाई के समान रहे, जो शरीर में भी और विशेष कर प्रभु में भी मेरा प्रिय हो।
[17] इसलिए यदि तू मुझे सहभागी समझता है, तो उसे इस प्रकार ग्रहण कर जैसे मुझे।

यदि हम इस संसार में परमेश्वर के छुटकारे की प्रक्रिया में परमेश्वर के साथ परिश्रम करने वाला समाज बनना चाहते हैं, तो हमें क्षमा की सामर्थ पर चलना होगा। क्षमा का अर्थ अब हम उनके विरोध में अपने मन में पाप नहीं रखते। अब हम उन्हें दोष देने वाली नज़र से नहीं देखते। हम उस स्वतंत्रता और आज़ादी में आनन्द मनाते हैं जिसमें हम परमेश्वर के समक्ष और एक दूसरे के समक्ष खड़े रहते हैं।

पुनःस्थापन

चौथा मुख्य उपादान जो हम परमेश्वर के छुटकारे की प्रक्रिया में देखते हैं, वह है पुनःस्थापन।

परमेश्वर अपने छुटकारे के हृदय से वस्तुओं की ओर वैसे ही देखता है जैसे वे होंगी, वे वर्तमान समय में जिस तरह दिखाई देती हैं, वैसे नहीं। छुड़ाने वाली आंखें हमेशा आशा के साथ देखती हैं। छुड़ाने वाली आंखें कल्पना करती है कि भविष्य क्या हो सकता है और उसे वास्तविकता बनाने हेतु कार्य करती हैं। छुड़ाने वाली आंखें वर्तमान की विपदा से धुंधली नहीं पड़ जाती।

पुनःस्थापन स्वयं ही एक प्रक्रिया है जहां परमेश्वर वस्तुओं को उनकी मूल स्थिति में लाना आरम्भ करता है और उन्हें और अधिक ऊंचे स्तर पर ले जाता है जो हमने पहले कभी नहीं जाना था। हमें पुनःस्थापन के लिए परमेश्वर पर विश्वास करना चाहिए और हमारे अपने जीवनों में, और

हमारे आसपास के लोगों के जीवनों में इस दिशा में कार्य करना चाहिए। पुनःस्थापन देखने के लिए, हमें विश्वास की आंखों से देखना है और विश्वास से उनकी ओर बढ़ना है।

परमेश्वर का छुटकारे का कार्य

- जो खो गया है उसे पाता है,
- जो नष्ट हो गया है उसे फिर लाता है,
- जो बर्बाद हो गया है उसे पुनःस्थापित करता है,
- जो बंधा हुआ है उसे मुक्त करता है,
- जो नष्ट हो गया है उसका पुनःनिर्माण करता है,
- जो बिगड़ चुका है उसे सुंदर बनाता है,
- जो घायल हुआ है उसे चंगा करता है,
- जो थक चुका है उसे नया बनाता है,
- जो मृतःप्राय है उसे संजीवित करता है और
- जो मर गया है उसे पुनरूत्थित करता है।

व्यक्तिगत लागूकरण

1) आपके अपने जीवन में, समय, बलिदान, क्षमा और पुनःस्थापन के चार मुख्य उपादानों का विचार करते हुए, सोचें कि किसी निश्चित व्यक्तिगत जीवन स्थिति को छुटकारा पाते हुए देखने हेतु आप परमेश्वर के साथ उसकी छुटकारे की प्रक्रिया में कैसे कार्य कर सकते हैं।

2) समय, बलिदान, क्षमा और पुनःस्थापन के चार मुख्य उपादानों का विचार करते हुए, सोचें कि जिस व्यक्ति के साथ आप काम कर रहे हैं, उसके जीवन की किसी निश्चित व्यक्तिगत जीवन स्थिति को छुटकारा पाते हुए देखने हेतु आप परमेश्वर के साथ उसकी छुटकारे की प्रक्रिया में कैसे कार्य कर सकते हैं।

आपका प्रेम कभी टलता नहीं

क्रिस क्विलाला/जीज़स कल्चर

मैं भाग भी जाऊं
तौ भी तेरे प्रेम से मुझे
कुछ नहीं अलग कर सकता

मैं जानता हूं कि मैं गलतियां करूंगा
परंतु प्रतिदिन तेरे पास मेरे लिए नई करूणा है
तेरा प्रेम कभी टलता नहीं

कोरसः
तू युगानूयुग एक सा है
तेरा प्रेम कभी नहीं बदलता
रात में भले ही दुख हो, पर भोर में आनंद होगा

और जब सागर गरजे
मुझे डरना नहीं है
क्योंकि मैं जानता हूं कि तू मुझसे प्रेम करता है
तेरा प्रेम कभी टलता नहीं

हवा तूफानी है और पानी गहरा
परंतु इस खुले समुद्र में मैं अकेला नहीं हूं
क्योंकि तेरा प्रेम कभी टलता नहीं

गहरी खाई बहुत चौड़ी है
मैंने कभी नहीं सोचा कि मैं उस ओर पहुंच पाऊंगा
परंतु तेरा प्रेम कभी टलता नहीं

ब्रिज्जः
तू सारी बातों से मेरी भलाई उत्पन्न करता है!

क्या आप उस परमेश्वर को जानते हैं जो आपसे प्रेम करता है?

दो हज़ार साल पहले, परमेश्वर इस संसार में मनुष्य बनकर आया। उसका नाम यीशु है। उसने पूर्ण रूप से निष्पाप जीवन बिताया। यीशु देहधारी परमेश्वर था, इसलिए जो कुछ उसने कहा और किया, उसके द्वारा उसने परमेश्वर को हम पर प्रगट किया। जिन वचनों को उसने कहा, वे परमेश्वर के वचन थे। जिन कामों को उसने किया, परमेश्वर के कार्य थे। यीशु ने इस पृथ्वी पर कई सामर्थ के काम किए। उसने बीमारों को और पीड़ितों को चंगा किया। उसने अन्धों की आंखें खोलीं, बहरे कानों को खोल दिया, लंगड़े चलने लगे। उसने हर प्रकार के रोगों और बीमारियों को चंगा किया। उसने आश्चर्यजनक रूप से कुछ ही रोटियां बहुगुणित कर भूखों को खिलायी, आंधी को थामा और कई आश्चर्यकर्म किए।

ये सारे कार्य हमें दिखाते हैं कि यीशु अच्छा परमेश्वर है, जो चाहता है कि उसके लोग भले, चंगे स्वस्थ और खुश रहें। परमेश्वर लोगों की ज़रूरतों को पूरा करना चाहता है।

फिर परमेश्वर ने क्यों मनुष्य बनने का और हमारे संसार में आने का निर्णय लिया? यीशु क्यों आया?

हम सबने पाप किया है और ऐसे कामों को किया है जो हमें उत्पन्न करने वाले परमेश्वर के सम्मुख अस्वीकारणीय हैं। पाप के परिणाम हैं। पाप परमेश्वर और हमारे बीच एक ऊंची दीवार है जिसे हम लांघ नहीं सकते। पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है। वह हमें उस परमेश्वर को जानने और उसके साथ, जिसने हमें बनाया है, अर्थपूर्ण रिश्ता बनाए रखने से रोकता है। इसलिए, हम में से कई लोग अन्य बातों का सहारा लेकर इस खालीपन को भरने की कोशिश करते हैं।

हमारे पापों का अन्य परिणाम है। परमेश्वर से अनंतकाल तक अलगाव। परमेश्वर की अदालत में, पाप का दण्ड मृत्यु है। मृत्यु परमेश्वर से दूर नर्क में अनंतकाल का अलगाव है।

परंतु सुसमाचार यह है कि हम पाप से मुक्ति पाकर परमेश्वर से फिर मेल कर सकते हैं। बाइबल कहती है, ***"क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है"*** **(रोमियों 6:23)।** यीशु ने सम्पूर्ण जगत के पापों का दण्ड सहा, वह क्रूस पर मर गया। फिर तीसरे दिन वह जी उठा, और उसने कइयों को खुद को जीवित दिखाया और वह स्वर्ग पर चढ़ गया।

परमेश्वर प्रेमी और दयालु है। वह नहीं चाहता कि हममें से कोई व्यक्ति नर्क में नाश हो। और इसलिए वह सम्पूर्ण मानवजाति को पापों और उसके परिणामों से मुक्ति

का मार्ग दिखाने के लिए आया। वह पापियों को बचाने के लिए आया—आपके और मेरे जैसे लोगों को पाप और अनंतकाल की मृत्यु से बचाने के लिए।

पापों की यह मुफ्त क्षमा पाने के लिए बाइबल हमें बताती है कि हमें केवल एक काम करना है—जो कुछ प्रभु यीशु मसीह ने क्रूस पर किया उसे ग्रहण करना और उस पर सम्पूर्ण हृदय से विश्वास करना।

"जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी" **(प्रेरितों के काम 10:43)।**

"कि यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा" **(रोमियों 10:9)।**

यदि आप प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करेंगे, तो आप भी पापों की क्षमा और शुद्धता पा सकते हैं।

प्रभु यीशु मसीह में और जो कुछ उसने आपके लिए क्रूस पर किया उस पर विश्वास करने हेतु निर्णय लेने में आपकी सहायता करने के लिए यहां एक सरल प्रार्थना दी गई है। इस प्रार्थना की सहायता से आप जो कुछ यीशु ने आपके लिए किया, उसे ग्रहण कर सकते हैं और क्षमा और पापों से शुद्धि पा सकते हैं। यह प्रार्थना मात्र मार्गदर्शन के लिए है। आप अपने शब्दों में भी प्रार्थना कर सकते हैं।

प्रिय प्रभु यीशु, जो कुछ आपने क्रूस पर किया उसे मैंने आज समझा है। आप मेरे लिए मर गए, आपने मेरे लिए बहुमूल्य लहू बहाया और मेरे पापों का दण्ड चुकाया, ताकि मुझे क्षमा मिल सके। बाइबल बताती है कि जो कोई आप पर विश्वास करेगा वह अपने पापों से क्षमा पाएगा।

आज, मैं आप में विश्वास करने का और क्रूस पर मेरे लिए मरकर और फिर मरे हुओं में से जी उठकर जो कुछ आपने मेरे लिए किया उसे ग्रहण करने का निर्णय लेता हूं। मैं जानता हूं कि मैं अपने भले कामों से खुद को बचा नहीं सकता, न ही और कोई मनुष्य मुझे बचा सकता है। मैं अपने पापों की क्षमा मोल नहीं ले सकता।

आज, मैं अपने हृदय में विश्वास करता हूं और अपने मुंह से कहता हूं कि आप मेरे लिए मर गए, आपने मेरे पापों का दण्ड चुकता किया। आप फिर मरे हुओं में से जी उठे, और आपमें विश्वास करने के द्वारा, मैं पापों की क्षमा और मेरे पापों से शुद्धता पा सकता हूं।

धन्यवाद यीशु। आपसे प्रेम करने, आपको अधिकाई से जानने और आपके प्रति विश्वासयोग्य रहने में मेरी सहायता कीजिए। आमीन।

ऑल पीपल्स चर्च के विषय में

ऑल पीपल्स चर्च (एपीसी) का दर्शन बैंगलोर शहर में नमक और ज्योति, और भारत देश और संसार के राष्ट्रों के लिए एक आवाज़ बनना है।

आल पीपल्स चर्च यीशु से **प्रेम रखने वाली, वचन पर केन्द्रित, आत्मा से भरपूर परिवारिक कलीसिया,** एक प्रशिक्षण संस्थान, मिशन आधार, संसार में सुसमाचार करने वाली कलीसिया है

- एक **पारिवारिक कलीसिया** के रूप में, हम मसीह केंद्रित संगति में एक समुदाय के रूप में एक साथ बढ़ते हैं, परमेश्वर की मण्डली के रूप में प्रेम में एक दूसरे की देखभाल और सेवा करते हैं।
- एक **सुसज्जित करने वाले केंद्र** के रूप में हम प्रत्येक विश्वासी को विजयी रूप से जीने, मसीह की समानता में परिपक्व होने और उनके जीवनों के लिए परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए सामर्थी बनाते हैं और सुसज्जित करते हैं।
- एक **मिशन के आधार** के रूप में हम अपने शहर, राष्ट्र और राष्ट्रों को परमेश्वर के वचन और पवित्र आत्मा की सामर्थ के अलौकिक प्रदर्शनों के माध्यम से यीशु मसीह के पूर्ण सुसमाचार के साथ आशीष देने के लिए सार्थक सेवकाई में संलग्न हैं।
- एक **विश्व सुसमाचार प्रचारक** के रूप में हम ईश्वरीय अगुवों और आत्मा से भरी कलीसियाओं का पोषण करके स्थानीय और विश्व स्तर पर सेवा करते हैं जो परमेश्वर के राज्य के लिए उनके क्षेत्रों को प्रभावित कर सकते हैं।

एपीसी में हम परमेश्वर का सम्पूर्ण वचन बिना किसी समझोते के साथ पवित्र आत्मा के अभिषेक और प्रकाशन के साथ प्रस्तुत करने के प्रति समर्पित हैं। हमारा विश्वास है कि अच्छा संगीत, रचनात्मक प्रस्तुति, बुद्धिमानीपूर्ण पक्ष समर्थन, समकालीन सेवकाई की तकनीकें, आधुनिक तंत्रविज्ञान आदि पवित्र आत्मा के चिन्हों, चमत्कारों, आश्चर्यकर्मों और पवित्र आत्मा के वरदानों के साथ वचन की घोषणा करने की परमेश्वर द्वारा नियुक्त पद्धति का स्थान नहीं ले सकते (1 कुरिन्थियों 2:4,5; इब्रानियों 2:3,4)। हमारा विषय यीशु है, हमारी विषयवस्तु वचन है, हमारी पद्धति पवित्र आत्मा की सामर्थ है, हमारा आवेश लोग हैं, और हमारा लक्ष्य मसीह सदृश्य परिपक्वता है।

हमारा मुख्यालय बैंगलोर में है, परंतु ऑल पीपल्स चर्च की भारत की अन्य कई स्थानों में शाखाएं हैं। ऑल पीपल्स चर्च की वर्तमान सूची और सम्पर्क सूचना के लिए कृपया हमारे वेबसाईट को भेंट दें: **apcwo.org/locations** या इस पते पर ई-मेल भेजें: **contact@apcwo.org**

ऑल पीपल्स चर्च के प्रकाशन

A Church in Revival
A Real Place Called Heaven
A Time for Every Purpose
Ancient Landmarks
Baptism in the Holy Spirit
Being Spiritually Minded and Earthly Wise
Biblical Attitude Towards Work
Breaking Personal and Generational Bondages
Change
Code of Honor
Divine Favor
Divine Order in the Citywide Church
Don't Compromise Your Calling
Don't Lose Hope
Equipping the Saints
Foundations (Track 1)
Fulfilling God's Purpose for Your Life
Gifts of the Holy Spirit
Giving Birth to the Purposes of God
God Is a Good God
God's Word—The Miracle Seed
How to Help Your Pastor
Integrity
Kingdom Builders
Laying the Axe to the Root
Living Life Without Strife
Marriage and Family
Ministering Healing and Deliverance
Offenses–Don't Take Them
Open Heavens
Our Redemption
Receiving God's Guidance
Revivals, Visitations and Moves of God
Shhh! No Gossip!
Speak Your Faith
The Conquest of the Mind
The Father's Love
The House of God
The Kingdom of God
The Mighty Name of Jesus
The Night Seasons of Life
The Power of Commitment
The Presence of God
The Redemptive Heart of God
The Refiner's Fire
The Spirit of Wisdom, Revelation and Power
The Wonderful Benefits of Speaking in Tongues
Timeless Principles for the Workplace
Understanding the Prophetic
Water Baptism
We Are Different
Who We Are in Christ
Women in the Workplace
Work Its Original Design

नई पुस्तकें नियमित रूप से प्रकाशित की जाती हैं। पी. डी. एफ., आडियो तथा अन्य फॉर्मेट में निःशुल्क ए. पी. सी. पुस्तकों को डाऊन लोड करने हेतु कृपया **apcwo.org/books** को भेंट दें। इनमें से कई पुस्तकें अन्य भाषाओं में भी उपलब्ध हैं। वैसे ही, निःशुल्क ऑडियो और वीडियो संदेशों, संदेश की टिप्पणियों, और अन्य कई संसाधनों के लिए हमारे वेबसाईट **apcwo.org/sermons** को भेंट दें।

क्रिसलिस परामर्श

क्रिसलिस काउंसलिंग लोगों को जीवन की चुनौतियों का सामना करने और उन्हें दूर करने में मदद करने हेतु व्यक्तिगत परामर्श प्रदान करता है। क्रिसलिस परामर्श व्यावसायिक तौर प्रशिक्षित और अनुभवी मसीही सलाहकारों की एक टीम है।

हमारी सेवाएं सभी आयु समूहों के लिए हैं और जीवन की चुनौतियों की एक विस्तृत श्रृंखला का समाधान करती हैं।

किशोरों
व्यक्तिगत समायोजन
संबंधपरक चुनौतियां
शिक्षा में कम सफलता पाने वाले
कार्य संबंधित मुद्दे
परिवार /दम्पत्तिः विवाह पूर्व, वैवाहिक
माता-पिता / बच्चे / भाई-बहन / सहकर्मी
व्यवहार सम्बंधी विकार
व्यक्तित्व विकार
मनोवैज्ञानिक / भावनात्मक समस्याएं
तनाव / आघात
शराब / नशीली दवाओं का गलत इस्तेमाल
आत्मिक समस्याएं
ज़िंदगी की सीख

क्रिसलिस परामर्श सेवाओं के लिए शुल्क सस्ती और सुलभ है।

हमारे प्रशिक्षित सलाहकारों में से किसी एक के साथ मुलाकात तय करने के लिए:

Website: chrysalislife.org
Phone: +91-80-25452617 or toll-free (within India) 1-800-300-00998
Email: counselor@chrysalislife.org

क्रिसलिस काउंसलिंग ऑल पीपल्स चर्च एंड वर्ल्ड आउटरीच की सेवकाई है।

ऑल पीपल्स चर्च के साथ साझेदारी करें

ऑल पीपल्स चर्च स्थानीय कलीसिया के रूप में सम्पूर्ण भारत में सुसमाचार प्रचार करते हुए, विशेषकर उत्तर भारत में, उसकी सीमाओं से परे सेवा करता है। उसका विशेष लक्ष्य (अ) अगुवों को दृढ़ करना, (ब) जवानों को सेवकाई के लिए सुसज्जित करना और (क) मसीह की देह की उन्नति करना है। जवानों के लिए कई प्रशिक्षण सम्मेलन, मसीही अगुवों के लिए सभाओं का सम्पूर्ण वर्ष भर आयोजन किया जाता है। इसके अतिरिक्त, पुस्तकों की कई हजारों प्रतियां अंग्रेजी में और अन्य कई भारतीय भाषाओं में निःशुल्क वितरीत की जाती हैं, उसके पीछे उद्देश्य यह है कि विश्वासियों को वचन और आत्मा में उन्नति प्रदान करें।

हम आपको निमंत्रण देते हैं कि एक समय का दान भेजकर या मासिक आर्थिक दान भेजकर आर्थिक रूप से हमारे साथ साझेदारी करें। सम्पूर्ण राष्ट्र में इस का कार्य के लिए जो भी रकम आप भेज सकते हैं, उसके लिए हम आपके प्रति कृतज्ञ रहेंगे।

आप अपने दान चेक/बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से "ऑल पीपल्स चर्च," बैंगलोर के नाम पर हमारे कार्यालय के पते पर भेज सकते हैं। अन्यथा हमारे बैंक खाते के विवरण का उपयोग कर आप अपना योगदान सीधे बैंक में डाल सकते हैं।

Account Name: All Peoples Church
Account Number: 50200068829058
IFSC Code: HDFC0004367
Bank: HDFC Bank, 7M/308 80 Ft Road, HRBR Layout, Kalyan Nagar, Bengaluru, 560043, Karnataka

कृपया ध्यान दें: *ऑल पीपल्स चर्च केवल भारतीय नागरिकों के बैंक योगदान ही स्वीकार कर सकता है। यदि आप चाहते हैं तो, अपना दान भेजते समय, स्पष्ट रूप से लिखें कि आप एपीसी सेवकाई के किस क्षेत्र के लिए दान भेजना चाहते हैं। अतिरिक्त जानकारी के लिए कृपया इस स्थान को भेंट दें:* **apcwo.org/give**

उसी तरह, हमारे लिए और हमारी सेवकाई के लिए जब भी हो सके, प्रार्थना करना न भूलें।

धन्यवाद और परमेश्वर आपको आशीष दे!

DOWNLOAD THE FREE APP!

Search for
"All Peoples Church Bangalore"
in the App or Google play stores.

Available on the App Store

ANDROID APP ON Google play

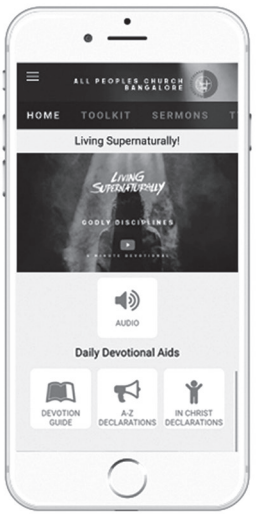

A daily 5-minute video devotional.
A daily Bible reading and prayer guide.
5-minute Sermon summary.
Toolkit with Scriptures on various topics to build faith and information to share the Gospel.
Resources with sermons, sermon notes, TV programs, books, music and more.

IF YOU LOVE IT, TELL OTHERS ABOUT IT!

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज एंड वर्ल्ड आउटरीच

apcbiblecollege.org

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज और सेवा प्रशिक्षण केंद्र (एपीसी-बीसी) भारत केबैंगलोर में आत्मा से परिपूर्ण, अभिषिक्त, सक्रिय सेवकाई में सहभागी प्रशिक्षण और सिद्धांत की दृष्टि से सही एवं परमेश्वर के वचन के बौद्धिक दृष्टि से प्रेरणादायक अध्ययन के साथ पवित्र आत्मा की अलौकिक सामर्थ में सेवकाई केलिए तैयारी प्रदान करता है। हम सेवकाई के लिए सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास में विश्वास करते हैं और ईश्वरीय चरित्र, परमेश्वर के वचन में गहरी बुनियाद, और चिन्ह, चमत्कारों और आश्चर्यकर्मों पर ज़ोर देते हैं—सब कुछ प्रभु के साथ निकट रिश्ते से प्रवाहित होता हुआ।

एपीसी-बीसी में सही शिक्षा के अतिरिक्त, हम प्रत्यक्ष रूप से परमेश्वर के प्रेम, पवित्र आत्मा का अभिषेक और उपस्थिति और परमेश्वर के अलौकिक कार्य पर बल देते हैं। कई युवा स्त्री और पुरुषों ने प्रशिक्षण पाया है और उनके जीवनों में परमेश्वर की बुलाहट को पूरा करने हेतु उन्हें बाहर भेजा गया है।

निम्नलिखित तीन पदवियां दी जाती हैं:

- ईश्वर विज्ञान और मसीही सेवकाई में एक वर्षीय प्रमाणपत्र (सी.टी.एच.)
- ईश्वर विज्ञान और मसीही सेवकाई में दो वर्षीय डिप्लोमा (डी.टी.एच.)
- ईश्वर विज्ञान और मसीही सेवकाई में तीन वर्षीय स्नातक (बी.टी.एच.)

हर सप्ताह के दिन, **सोमवार से शुक्रवार तक भारतीय समय के अनुसार सुबह 9 से दोपहर 12 बजे तक** (UTC+5:30) कक्षाएं ली जाती हैं।

- **ऑन-कैंपस:** कैंपस में व्यक्तिगत कक्षाओं में भाग लें
- **ऑनलाइन:** ऑनलाइन लाइव व्याख्यान में भाग लें
- **ई-लर्निंग:** ऑनलाइन पोर्टल apcbiblecollege.org/elearn.

के माध्यम से स्वयं की गति से सीखना ऑनलाइन आवेदन करने केलिए, और कॉलेज, पाठ्यक्रम, पात्रता मानदंड, शिक्षण शुल्क और आवेदन पत्र डाउनलोड करने केबारे में अधिक जानकारी केलिए, कृपया इस वेबसाइट को भेंट दें: apcbiblecollege.org

परमेश्वर का हृदय स्वभावतः छुड़ाने वाला है। परमेश्वर जो आरंभ करता है उसे वह नहीं छोड़ता। वह पूर्ण रूप से प्रेम करता और बचाता है, फिर उसकी कीमत चाहे जो हो। परमेश्वर हमेशा छुटकारा देने का और लोगों को अपनी ओर लाने का प्रयास करता है। हमें उसके समान बनने हेतु बुलाया गया है ओर इसलिए जीवन की परिस्थितियों के प्रति और उन समस्याओं के प्रति जिनका हम सामना करते हैं, हमारा रवैया भी छुड़ाने वाला होना चाहिए।

इस अध्ययन में, हमारा लक्ष्य परमेश्वर के छुड़ाने वाले हृदय को समझना और थाम लेना है, ताकि हम उसकी छुड़ाने वाली नज़रों से जीवन की परिस्थितियों को देखें और हमारे अपने जीवनों में एवं हमारे आसपास के लोगों के जीवनों में उसकी छुड़ाने वाली प्रक्रिया में परमेश्वर के सहकर्मी बनना सीखें।

परमेश्वर की छुड़ाने वाली प्रक्रिया में समय, बलिदान, क्षमा और पुनर्स्थापन के तत्व शामिल हैं। हम यहां पर परमेश्वर की इस छुड़ाने वाली प्रक्रिया में उसके सहकर्मी बनने के लिए हैं। हमें परमेश्वर के साथ काम करना है, और प्रत्येक तत्व को पहचानना है और उसका अनुसरण करना है, जैसा वह हमारे जीवनों में वस्तुओं को छुड़ाने हेतु कार्य करता है, उसी तरह जब हम दूसरों के जीवनों में उसके छुड़ाने वाले कार्य को होते हुए देखने के लिए उसके साथ परिश्रम करते हैं।

आप क्या चाहते हैं कि परमेश्वर आपके जीवन में क्या छुड़ाए? परमेश्वर आपका छुड़ाने वाला है। कुछ भी उसकी छुड़ाने की योग्यता से परे नहीं हैं। आप विश्वास से उसकी ओर देख सकते हैं, फिर आपकी परिस्थितियां कुछ भी क्यों न हों और उसके छुटकारे के कार्य को अनुभव करें। यह पुस्तक इसमें आपकी सहायता करेगी।

All Peoples Church & World Outreach
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617
Email: contact@apcwo.org
Website: apcwo.org